

5G नेटवर्क

दिव्यायनी महादेव आवटे – द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

5G नेटवर्क क्या है? -

आज के समय में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जो इंटरनेट का इस्तेमाल ना करता हो। हमारे भारत देश में पहले के मुकाबले अब गांव में रहने वाले लोग भी इंटरनेट का इस्तेमाल करने लगे हैं। हमारे देश की सरकार ने भी भारत को डिजिटल इंडिया का नाम दिया है और सरकारी दफ्तरों में भी सभी प्रकार के कार्य अब डिजिटल रूप में यानि कि इंटरनेट की सहायता से किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हम 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और अब आगे हम धीरे धीरे 5G तकनीक के ओर अग्रसर हो रहे हैं। आज के इस लेख में हम आप सभी लोगों को 5G नेटवर्क से जुड़ी सारी जानकारी प्रस्तुत कर रहे हैं।

5G में 'G' का अर्थ क्या है?

अब तक 1G से लेकर 5G टेक्नोलॉजी आ चुकी है। कई लोग सोचते हैं, कि आखिर G का क्या तात्पर्य होता है। तो दोस्तों हम आपको बता दें, कि 1G से लेकर 5G तक G का तात्पर्य जनरेशन से होता है, जनरेशन यानी की पीढ़ी। हम जिस भी पीढ़ी की टेक्नोलॉजी इस्तेमाल कर रहे होते हैं, उसके आगे G लग जाता है और यही G आधुनिक तकनीक के उपकरणको नई पीढ़ीके रूपमें दर्शाने का कार्य करता है। हमारा देश धीरे-धीरे नई तकनीक की ओर अग्रसर होता जा रहा है और हमारे देशमें भी नई-नई तकनीकों का निर्माण किया जा रहा है।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी क्या है (5G Technology)

5G की टेक्नोलॉजी दूरसंचार की टेक्नोलॉजी से संबंध रखती है। किसी भी तकनीक का इस्तेमाल वायरलेस तकनीक के जरिए किया जाता है। दूरसंचार की इस नई तकनीक में रेडियो तरंगों और विभिन्न तरह की रेडियो आवृत्ति का इस्तेमाल किया जाता

है। अब तक जितने भी टेक्नोलॉजी दूरसंचारके क्षेत्रमें आ चुके हैं, उनके मुकाबले में यह तकनीक काफी नई और तीव्रता से कार्य करनेवाली तकनीक है। इस नवीन तकनीक का अंतिम मानव का निर्धारण आई टी यू यानी कि इंटरनेशनल टेलीकम्युनिकेशन यूनियनके हाथों किया जाता है। 5G की तकनीक 4G तकनीक के मुकाबले नेक्स्ट जनरेशन की तकनीक है और यह अब तक आ चुकी सभी तकनीक से सबसे ज्यादा आधुनिक तकनीक मानी जा रही है।

नाम	5G नेटवर्क
लांच	सन 2020
भारत में लांच	सन 2021 (दूसरी छ माही से)
स्पीड	20 gh प्रतिसेकंड
इंटरनेटस्पीड	1 gh फाइल डाउनलोड प्रति सेकंड
बैंडविड्थ	3500 मेगाहर्टज

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी भारतमें लांच

छठवें स्थानपर दुनिया के सबसे अमीर आदमी मुकेश अंबानीजीने 5G तकनीक पर अपडेट देते हुए कहा है, कि इसे हमारे भारत देशमें 2021 के दूसरी छ माहीमें ग्राहकों की सेवाकेलिए 5G जी नेटवर्क को लांचकर दिया जाएगा। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देशमें इससे जुड़े हुए सभी प्रकारके नवीन बदलाव एवं इससे जुड़ी हुई प्रक्रियाओं को एक बूस्ट प्रदान करनेकी आवश्यकता है। अंबानीजीने कहा कि यह तकनीकसभी वर्गोंके हाथों तक पहुंचे इसके लिए इसेआसान, सुलभ एवं सस्ता करनेकी बेहद आवश्यकता होगी। इसलिए इसे जल्द से जल्द लांच किया जायेगा।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी फायदे

इस नई तकनीक मुख्य विशेषता यह है कि इस की सहायतासे ऑटोमोबाइल के जगतमें औद्योगिक उपकरण एवं संसाधन यूटिलिटी मशीन संचार एवं आंतरिक सुरक्षा भी पहलेके मुकाबले और विकसित एवं बेहतर होनेके साथ-साथ इनके बीचमें संबद्धता की वृद्धि होगी ।

5G तकनीक सुपर हाई स्पीड इंटरनेट की कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ-साथ यह कई महत्वपूर्ण स्थानोंमें उपयोग में लाया जाएगा । इस टेक्नोलॉजी आ जाने से कनेक्टिविटी में और भी ज्यादा विकास एवं शुद्धता प्राप्त होगी।

5G के तकनीक की वजहसे ड्राइवरलेस कार, हेल्थकेयर, वर्चुअलरियलिटी, क्लाउड गेमिंगके क्षेत्रमें नए-नए विकासशील रास्ते खुलते चले जाएंगे।

क्रॉलिकम के अनुसार अभी तक 5G की तकनीक ने करीब १३.१ ट्रिलियन डॉलर ग्लोबल इकोनामी को आउटपुट प्रदान कर दिया है । इसकी वजह से दुनिया भर में करीब २२.८ मिलियन के नए जॉब अवसर विकसित हो रहे हैं।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी विशेषताएं

5G नेटवर्क स्पीड

इस नई तकनीक की स्पीड करीब एक सेकंडमें २० सल के आधारपर इसके उपभोक्ताओं को प्राप्त होगी । इस तकनीक के आ जानेसे टेक्नोलॉजी से जुड़े हुए सभी कार्योंमें तेजीसे विकास होगा और सभी कार्य आसानीसे काफी फास्ट स्पीडमें किए जा सकेंगे।

इंटरनेट स्पीड में वृद्धि

अभी हम वर्तमान समयमें 4G तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं और इस तकनीक का इस्तेमाल करके हम 1 सेकेंडमें करीब 1GB की फाइलको डाउनलोड करनेकी क्षमता रखते हैं, वही 4G की तकनीक में हमें 1 सेकेंड के अंदर करीब 10GB या इससे ऊपरकी डाउनलोडिंग क्षमतावाली गति प्राप्त होगी ।

डिजिटल इंडिया क्षेत्रमें विकास

5G नेटवर्क के आ जानेसे देशमें डिजिटल इंडिया को एक अच्छी गति प्राप्त होगी और साथ ही में देश के विकास में भी तीव्रता आएगी।

जीडीपी बढ़ोतरी में तेजी

हाल ही में आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन ने दावा देते हुए कहा है, कि देशमें 5G के तकनीक के आ जानेसे हमारे देशकी जीडीपी एवं अर्थव्यवस्था में काफी सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकता है ।

5G नेटवर्क टेक्नोलॉजी नुकसान

तकनीकी शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों के अनुसार एक शोधमें पाया गया कि 5G तकनीक की तरंगे दीवारों को भेदने में पूरी तरीके से असक्षम होती है । इसी के कारणवश इसका घनत्व बहुत दूर तक नहीं जा सकता है और इसीके परिणामस्वरूप इसके नेटवर्क में कमजोरी पाई गई।

दीवारों को भेदनेके अलावा इसकी तकनीक बारिश, पेड़ पौधों जैसे प्राकृतिक संसाधनोंको भी भेदने में पूरी तरीके से असक्षम सिद्ध हुई है । 5G तकनीक को लॉन्च करने के बाद हमें इसके नेटवर्क में काफी समस्या देखनेको मिल सकती है ।

कई साधारण लोगोंका मानना है, कि 5G तकनीक में जिन किरणोंका उपयोग किया जा रहा है, उनका परिणाम काफी घातकसिद्ध हो रहा है और उसी का घातक परिणाम कोरोना वायरस है, परंतु अभी तक इस विषय में कोई साक्ष्य प्राप्ति नहीं हो सकी है।

5G नेटवर्क स्पेक्ट्रम बैंड

5G की नई तकनीक में millimeter-wave स्पेक्ट्रम अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । इसका सर्वप्रथम विचार वर्ष 1995 में सबसे पहले जगदीशचंद्र बोसजी ने प्रस्तुत किया था और उन्होंने बताया था, कि इन वेबका इस्तेमाल करके हम कम्युनिकेशन

को बेहतर बना सकते हैं। इस प्रकारकी तरंगे करीब 30 से लेकर 300 गीगाहर्ट्ज फ्रीक्वेंसी पर काम कर सकती हैं। ऐसी तरंगों का इस्तेमाल हम सैटेलाइट और रडार सिस्टमके अंदर भी इस्तेमाल करते हैं। 5G नेटवर्क की नई तकनीक करीब 3400 मेगाहर्ट्ज, 3500 मेगाहर्ट्ज और यहां तक कि 3600 मेगाहर्ट्ज बैंड्स पर काम कर सकती है। इस नई नेटवर्क तकनीक के लिए 3500 मेगाहर्ट्ज बैंड इसके लिए एक आदर्श बैंड कह सकतेहैं, क्योंकि यह सबसे मध्य का बैंड है और इसके साथही यह काफी अच्छी कनेक्टिविटी भी प्रदान करता है।

5G नेटवर्क का कोरोना कनेक्शन

हाल ही में कई बड़े-बड़े सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मपर लोगोंने कहा है, कि 5G तकनीक के टेस्टिंग के वजह से ही कोरोना वायरस का संक्रमण तेजीसे फैल रहा है और कोरोना वायरस के उत्पत्ति का भी कारण 5G तकनीकी है। इस प्रकार की खबरें हर एक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मपर 5G की तकनीक को लेकर फैल रही है। तो क्या सचमें 5G के कारण हो रही है मौत आइये जानते हैं क्या है ये -

5G तकनीक से जुड़ी हुई ये खबरें एक भ्रांतियां मात्र है। इन भ्रांतियों के बारेमें स्पष्टता से वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन यानी के डब्ल्यूएचओ ने एक अधिकारिक जानकारी लोगों के साथ साझा की है। उन्होंने कहा है, कि कोरोना वायरस का संक्रमण मोबाइल फोन नेटवर्क या फिर किसी अन्य रेडियो तरंगों के साथ एकस्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा सकता है। साथ ही डब्ल्यूएचओने यह भी कहा है कि कोरोना वायरस का संक्रमण उन देशोंमें भी है, जहां परअभी 5G की नेटवर्क टेस्टिंग तक नहीं की गई हैऔर ना ही वहांपर अभी तक 5G का मोबाइल नेटवर्क स्थापित किया गया है। फिरभी वहां पैर यह फैल रहा है इसलिए 5G का कोरोना से कोई संबंध नहीं है।

जब 5G की नई तकनीक पूरी तरीके से कार्य करने लगेगी तब संपूर्ण विश्वमें एक अलग ही विकास की लहर दौड़ना प्रारंभ कर देगी। इस तकनीक के भारतमें आ जानेसे हमारे देशका विकास और भी तीव्रता से होगा और नए नए रोजगार के अवसर लोगों को प्राप्त होंगे।

॥ जिंदगी ॥

ये जिंदगी हार मत
जिंदगी जीना सिखा रही है तुझे
जितने भी पत्थर आये
रास्ते मे फोड दे उन्हे
और रास्ता तैयार कर दे
मत घबरा उनसे
जो तुम्हें खिंच रहे हैं
मत कर उनकी फिक्र
जिन्हे तुम्हारी फिक्र नहीं
मत कर उनका बयान जिनका तुम पर विश्वास नहीं
भूलकर अपना कल
चिंता कर भविष्य की
कितनी कोशिश कि है तुमने
ऐसी ही मत गवा उन्हे
कर अपना सपना पुरा
मत कर अमृता
जो है तुम्हारे वो तुम्हें
जरूर समझ जायेंगे
और ना ही तुम्हारा विश्वास तोड़ेंगे
जी अमृत के प्याले के समान
मत गुजार जिंदगी
जहर के प्याले समान



मैं हमेशा इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार था कि मैं कुछ चीजें नहीं बदल सकता।



संपन्न

२०२२

आंतरराष्ट्रीय योग दिवस

सृष्टी पाटील - द्वितीय वर्ष, मेकॅट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी



अंतराष्ट्रीय योगदिवस जब मुझे इस बारे में पता चला तो मुझे बहुत खुशी हुई. मैंने खुद योग एवम प्राणायाम के सकारात्मक असर को महसूस किया है और मैं सुदर्शन क्रिया को अपने जीवन में आये बदलाव का पूरा क्रेडिट देती हूँ. अंतरराष्ट्रीय योग दिवस इस दिशा में बहुत अच्छा काम है, आप सभी को योग का महत्व जानना चाहिये और उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिये. आगे पढ़े योग का महत्व एवम कुछ महत्वपूर्ण आसन के बारे में. साथ ही जाने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के बारे में.

आधिकारिक नाम

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

कब मनाया जाता है

21 जून

कहाँ मनाया जाता है

पूरी दुनियामें

शुरू कबसे हुआ साल

2015 से

कैसे मनाते है

योग, ध्यान, और लोगों को

इसके बारेमें जागरूक करते हुए

आयुष मंत्रालय

देखरेख

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस की शुरुआत

21 जून को अंतरराष्ट्रीय स्तरपर योग दिवस घोषित किया गया है. योग साधना का महत्व भारत के इतिहास का अभिन्न अंग है। इसका सर्वाधिक प्रचार स्वामी विवेकानन्दजीने किया था. इसके बाद अन्तराष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है, जिसकी घोषणा 27 सितम्बर 2014 को प्रधानमंत्रीजी ने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में अपने भाषणमें की. जिसके बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की 193 सदस्यों की बैठक में अंतरराष्ट्रीय स्तरपर योगदिवस के लिए हामी भर दी और 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योगदिवस नाम दिया गया.

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस 2021 कब है

योग हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है. हर साल की इस साल भी अंतरराष्ट्रीय योगदिवस 21 जून को मनाया जायेगा.

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का लोगो

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस के लोगोमें एक व्यक्ति को दोनों हाथ जोड़ते हुए दिखाया गया है, जो की योगके साथ साथ, मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृतिके बीचकी एकताको दर्शाता है.

इस लोगो को बनाने में हरे, भूरे, पीले और नीले रंग का इस्तेमाल किया गया है और ये रंग अलग अलग चीजोंको रिप्रेजेंट करते हैं.

योगके लोगोमें दिखाई गई, हरे रंग की पत्तियां प्रकृतिका प्रतीक हैं, भूरे रंग के पत्तियां पृथ्वी तत्व का प्रतीक हैं, नीला रंग पानी का प्रतीक है, पीला रंग आगतत्व का प्रतीक है और सूरज ऊर्जा और प्रेरणा के स्रोत का प्रतीक है.

इसके अलावा इस लोगो में सबसे नीचे 'योग फॉर हारमनी एंडपीस' लिखा गया है. क्योंकि योगकी मददसे लोगोंको हारमनी एंडपीस मिलता है.

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस कहाँ किया जाएगा आयोजन

इसबार भी दुनिया के हर देशमें योगदिवस मनाया जाएगा. हालांकि कोरोना महामारी के चलते इस साल यह दिवस लोग अपने अपने घरोंपर मानते दिखाई देंगे. क्योकि भारतमें इस बार इस दिन का आयोजन कहीं भी नहीं किया जायेगा. आपको बता दें कि सन 2020 में इस दिन का आयोजन भारत के केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख के लेहमें मनाया जाना था, किन्तु कोरोना महामारी के चलते यह संभवन हीं हुआ. इससे पहले देहरादून में इस दिवस का आयोजन किया गया था.

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2021 थीम

हरसाल अंतरराष्ट्रीय योगदिवस के लिए एक थीम का चयन किया जाता है और उस थीम के जरिए लोगोंको योग के बारे में जागरूक किया जाता है. साल 2021 के लिए इस दिवस का थीम 'बी विथ योग बी ऐट होम' रखा गया है. हालांकि इस सालके लिए योगदिवस के लिए कोई भी आयोजन नहीं किया जा रहा है. इसलिए लोग इसे अपने अपने घरोंमें मना सकते हैं.

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

महत्वपूर्ण योगासन के नाम

यहाँ पर हम आपको कुछ योगासन एवं उसे किस तरहसे किया जाता है उसकी जानकारी देने जा रहे हैं, जो कि इस प्रकार है -

ताड़ासन

इसमें सीधे खड़े हो कर धीरे-धीरे अपना पूरा वजन पंजेपर डालते हैं और एड़ी को उपर उठाते हैं। इस स्थिती को दौहरता हैं और इसी स्थिती में कुछ देर खड़े रहते हैं इसे होल्ड करना कहते हैं।

पादहस्तासन

सीधे खड़े होकर आगे की तरफ झुकते हैं और घुटने मोड़े बिना अपने पैरो के अंगूठे छूते हैं। इसके बाद अपने सिरको जन्धो पर टच करने की कोशिश करते हैं।

शीर्षासन

इसमें सिर के बलपर खड़ा हुआ जाता हैं।

त्रिकोणासन

इसमें सीधे खड़े होकर पैरो के मध्य कुछ जगह की जाती हैं। कमरसे नीचेकी तरफ झुकते हैं साथ ही बिना घुटने मोड़े सीधे हाथसे उलटे पैरके पंजे को एवम उलटे हाथ से सीधे पैर के पंजेको स्पर्श करते हैं।

वज्रासन

दोनों पैरो को मोड़कर, रीढ़ की हड्डी को सीधा रखकर अपने हाथों को घुटनों पर रखते हैं।

शलभासन

इसमें पेट के बल लेता जाता हैं एवम हाथो और पैरोको सीधे हवामें खोलकर रखा जाता हैं।

धनुरासन

इसमें पेट के बल पर लेटकर हाथो से पैरो को पकड़ा जाता हैं। एक धनुष का आकार बनता हैं।

चतुरदण्डासन

इसमें उलटा लेटकर अपने हाथ के पंजो एवम पैर की उँगलियों पर शरीरका पूरा बैलेंस बनाया जाता हैं।

भुजंगासन

इसमें उलटा लेटकर पेट, जांघ, घुटने एवम पैर के पंजे सभी जमीन पर होते हैं और शरीर के आगे का हिस्सा हाथों के बल पर

उपर की तरह उठाया जाता हैं। इसमें हाथ की कोहनी थोड़ीसी मुड़ी हुई होती हैं।

ऐसे ही कई आसन है, जिन्हें आपको सीखकर रोजाना करना चाहिये। आसन दुबले एवम पतले सभी लोगो के लिए हितकारी हैं। विशेष बात आसन करते वक्त व्यक्ति को अपने सामर्थ्य के हिसाबसे ही आसन करना चाहिये, सभीके शरीरका लचीलापन अलग होता हैं और वह उसीके मुताबिक आसन कर पाता हैं।

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस क्यों मनाया जाता है

योगजीवन के लिए उतने ही जरुरी है, जितना की एक इञ्ज केमरीज को उसकी टेबलेट। किसी बीमारी में पड़कर फिर उसके इलाजके लिए इधर उधर भागना और बहुत खर्चा करना, इससे बेहतर हैं आजसे ही योग के लिए वक्त निकालना। ना इसमें कोई खर्चा होता हैं और नही कोई नुकसान। योगके बस फायदे होते हैं, जिन्हें दुनिया के सभी लोगोने माना है, इसलिए देशमें अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस मनाया जा रहा हैं। दुनियामें बढ़ती हुई बीमारियों को देखते हुए यह बहुत अच्छा निर्णय हैं जो विश्व स्तरपर लिया गया हैं। जरुरी नहीं हैं कि योग के लिए कई घंटोका वक्त निकाला जाए, ३० मिनिट भी आपके लिए फायदेमंद होंगे। योग केवल मोटे लोगो या बीमार लोगो के लिए ही जरुरी नहीं हैं। योग व्यक्ति का सर्वांगिण विकास करता हैं। शारीरिक विकास के साथ मनोविकास भी करता हैं।

अंतरराष्ट्रीय योगदिवस उद्देश्य

योगदिवस की घोषणा के पीछे एकही उद्देश्य है, धर्मजाति से उपर उठकर समाजकल्याण के लिए एक शुरुआत करना। योगसे जीवन के हर क्षेत्रमें लाभ हैं इससे कई तकलीफों का अंत हैं। अतः सभी धर्म एवम जातिमें योगके प्रति जागरूकता होनी चाहिये।

योग के फायदे

फिटनेस ५

योग से शारीरिक तंदुरुस्ती तो आती ही हैं, लेकिन सबसे ज्यादा मानसिक शांति मिलती हैं। इससे मन शांत रहता हैं एवम तनाव कम होता हैं। साथ ही यह शरीर की सभी क्रियाओंको नियंत्रित भी करता हैं। योगसे जीवन के सभी भाव नियंत्रित होते हैं जैसे खुशी, दुःख, प्यार।

शरीर स्वस्थ रहता हैं :

योगसे शरीरका ब्लडका प्रवाह नियंत्रित रहता है, जिससे

शरीरमें चुस्ती आती है, जोकि हानिकारक टोक्सिंस को बाहर निकालती है, जिससे शरीर केविकार दूर होते हैंऔर रोगियों को इससेआराम मिलताहै. साथही सकारात्मकता का भाव प्रवाहित होता हैं. जिससे शरीर स्वस्थ रहता हैं.

वजन कम होता हैं :

योग की सबसे प्रभावशाली विधा हैं सूर्यनमस्कार, जिससे शरीर में लचीलापन आता हैं. रक्त का प्रवाह अच्छा होता हैं. शरीर की अकड़न, जकड़नमें आराम मिलता हैं. योगसे वजन नियंत्रित रहता हैं. जिनका वजन कम है, वह बढ़ता हैं और जिनका अधिक हैं कम होता हैं.

चिंता का भाव कम होता हैं :

योगसे मन एकाग्रचित्त रहता है, उसमें शीतलता का भाव आता है और चिंता जैसे विकारों का अंत होता हैं. योगसे गुस्सा कम आता है, इससे ब्लडप्रेशर नियंत्रित रहता है, जिससे शारीरिक एवम मानसिक संतुलन बना रहता हैं.

मानसिक शांति

योगसे मन शांत रहता हैं. दिमाग दुरुस्त होता है, जिससे सकारात्मक विचारका प्रवाह होता हैं. सकारात्मक भावसे जीवन का नजरिया बदल जाता हैं. इन्सानको किसी भी वस्तु, अन्य इन्सान या जानवरमें कुछ गलत दिखाई नहीं देता. किसी के लिए मनमें बैर नहीं रहता. इस तरह योगसे मनुष्य का मनोविकास होता हैं.

मनोबल बढ़ता हैं :

योगसे मनुष्य में आत्मबल बढ़ता हैं, कॉन्फिडेंस आता हैं. जीवन के हर क्षेत्रमें कार्यमें सफलता मिलती हैं. मनुष्य हर परिस्थितीसे लड़ने के काबिल होता हैं. साथ ही जीवन की चुनौतियों को उत्साहसे लेता हैं

प्रतिरोधकक्षमता बढ़ती हैं :

योग से उपापचयकी क्रिया दुरुस्त होती हैं और श्वसनक्रिया संतुलित होती हैं जिससे मनुष्यमें रोगोंसे लड़ने की क्षमता बढ़ती हैं. बड़ी से बड़ी बीमारी सेलड़ने के लिए शक्तिका संचार होता हैं. योग एवम ध्यानमें बड़ीसे बड़ी बीमारी के लिए उपाय हैं.

जीवनके प्रति उत्साह बढ़ता :

योग कोआप जादूभी कह सकते है, नियमित योग करनेसे जीवन के प्रति उत्साह बढ़ता हैं. आत्मबल बढ़ता हैं, सकारात्मक

भाव आता है, साथ ही आत्मविश्वास में भी वृद्धि होती है, जिससे जीवन के प्रति उत्साह बढ़ता हैं.

उर्जा बढ़ती हैं :

मनुष्य रोजाना कई गतिविधियाँ करता है और दिन के अंतमें थक जाता है, लेकिन अगर वह नियमित योगा करता है, तो उसमें उर्जा का संचार होता हैं. थकावट या किसी भी कामके प्रति उदासी का भाव नहीं रहता. सभी अंगोंको अपना कार्य करने के लिए पर्याप्त उर्जा मिलती है, क्योंकि योगसे भोजन का सही मायनेमें पाचन होता हैं जाे दैनिक उर्जा को बढ़ाता हैं.

शरीर लचीला बनता हैं

योगसे शरीरकी जकड़न खत्म होती हैं. शरीरमें वसाकी मात्रा कम होती हैं जिससे लचीलापन आता हैं. लचीलेपन के कारण शरीर में कभी अनावश्यक दर्द नहीं रहता. और शरीर को जिस तरह का होना चाहिये, उसकी बनावट धीरे-धीरे रोजाना योग करनेसे ठीक हो जाती हैं.

पहला अंतरराष्ट्रीय योगदिवस (International Yoga Day)

योग का जन्म भारत के गर्त में कहीं छिपा हैं. हमारे ग्रंथोंमें योग का महत्व हैं जो अब पुरे विश्व का हिस्सा हैं. 21 जून साल 2015 को देशके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के खास आग्रहपर इस योग को अन्तराष्ट्रीय स्तरपर उठाने और इसके महत्व को सभी को समझाने हेतु इसे विश्व स्तरपर मनाया गया. साल 2015 में यह पहला अंतरराष्ट्रीय योगदिवस मनाया गया. यह पहली बार हुआ था कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें किसी प्रस्ताव को महज सो दिनोंमें पारित किया गया.

21 जून के इस दिन को मनाने के लिए भारत में विशेष तैयारी की गई, जिसमें BJP सदस्योंका विशेष योगदान रहा. साथही इसे देशमें फैलाने के लिए भी बीजेपी कार्यकर्ताओं द्वारा बहुत मेहनतप की गई. इस दिनआयुष मंत्रालयने भारतमें खास व्यवस्था की. नरेंद्र मोदी और 84 देशोंसे बड़ी संख्यामें 35,985 लोगोंने नई दिल्लीमें राजपथपर 35 मिनिटके लिए 21 योग आसन किये. दुनियाभर में लाखों लोगोंने योगको समर्पितदिन को मनाया. NCC कैडेट्स ने कई स्थानों पर प्रदर्शन करके एकलवर्दीधारी युवा संगठन द्वारा एक साथ सबसे बड़ा योगप्रदर्शन के लिए लिम्काबुक ऑफ़ रिकार्ड्स में प्रवेश किया.

राजपथ में आयोजित समारोहमें आयुष मंत्रालय को दिए गये दो गिनेस विश्वरिकॉर्डकी अवार्ड दिया गया और इसे आयुषमंत्री

किसी को हराना बहुत आसान है लेकिन किसी को जितना बहुत आसान है।

श्रीपदयेस्सो नाइकने प्राप्त किया. दो और रिकॉर्ड थे जो कि एक सबसे बड़े योगवर्ग के थे, जिसमें 35,985 लोग शामिल थे और दूसरा सबसे अधिक भाग लेने वाले राष्ट्रीयताओं (84 देशों) के लिए. स्वामी रामदेव जिन्हें योग गुरु कहा जाता है, उन्होंने भी अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए विशेष तैयारी की. रामदेवजीने 35 मिनट का एक विशेष कार्यक्रम बनाया, जिसे उन्होंने अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस के दिन सभी के लिए किया.

इस तरह दिल्ली में पहले अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस समारोहके दौरान, प्रधानमंत्रीजीने 35,000 से भी ज्यादा प्रतिभागियों के साथ योगका आयोजन किया.

स्वामी रामदेवका योग के लिए विशेष योगदान (**Ramdev baba yoga**)

रामदेवने देशमें योग का महत्व समझाने के लिए 25 साल दिए हैं. देशमें योग तो प्राचीनतम है, लेकिन लोगमें इसके प्रति रुझान के लिए रामदेवबाबा ने बहुत योगदान दिया है. इस कारण हरियाणा बीजेपी सरकारने रामदेव बाबा को योगका ब्रांड एम्बेसडर बनाया है. बाबा रामदेव के कारण ही लोगो में प्राणायाम के प्रति रुझान बढ़ा है इससे कई लोगो की परिशानियाँ कम हुई हैं. रामदेव बाबाने ही लोगो को आयुर्वेद के लिए प्रेरित किया है और इसी कारण पतंजलिको देशमें बहुत अधिक महत्व दिया जा रहा है.

योगमें कई गुण है, अतः इसके लिए दुनिया के सभी लोगो को जागना चाहिये. शारीरिक एवम मानसिक विकासके लिए हम सभी को एक दुसरे का साथ देना चाहिये, और इस दिशा में यह पहला बहुत बड़ा कदम है. अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को पूरी दुनिया में योग किया गया, जिसका सकारात्मक प्रभाव पुरे विश्वमें पड़ा, क्योंकि योग एक ऐसी विधा है, जिसे जिस स्थान पर बैठकर अधिक से अधिक लोगो के साथ किया जाता है. उस जगह पर उतनी ही अधिक सकारात्मकता बढ़ती है और यह उर्जा सभी के लिए बहुत फायदेमंद होती है.

योगमें सभी आसन एवम प्राणायाम का विशेष महत्व होता है, लेकिन इसे किसीके सानिध्यमें सीखनेके बाद ही करना उचित होता है। गलत तरीकेसे आसन अथवा प्राणायाम करनेसे विकार उत्पन्न होते हैं. आसनमें सूर्य नमस्कार एवम ध्यानमें सुदर्शन क्रिया

बहुत अधिक प्रचलित हैं. अगर इन दोनों विधाओं को भी आप अपनी दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बनाते हैं तो आपको इसके अनगिन तलाभ होंगे और आप बीमारियों से कोसो दूर होंगे.

भारतको योग का जनक क्यों कहते हैं ?

अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस की बात हो रही है तो भारत की बात क्यों ना हो! क्योंकि योग का इतिहास भारतमें ही है. माना जाता है की योग का इतिहास आजसे 27000 साल पुराना है. कहते हैं की 200 ई.पू. महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र को लिखा था. योग संस्कृतसे प्राप्त हुआ शब्द है, यही वजह है की एक समय यह सिर्फ हिन्दू धर्म के लोगो तक सीमित था. महर्षि पतंजलिने अष्टांगयोग के बारे में भी बताया, उन्ही की वजह से यह एक धर्ममें ना रहकर सम्पूर्ण दुनिया में फैलाया गया. आज विज्ञान भी योगके महत्वको बताती है. आज योग हमारे जीवन का अहम हिस्सा बना हुआ है चाहे वह स्वास्थ्य के लिए हो या आत्मशांति के लिए.

अन्तरराष्ट्रीय योगदिवस अनमोल वचन (Yoga Quotes in Hindi)

योग करने सेना केवल बॉडी को पावर और एनर्जी मिलती है, बल्कि मन को पीस भी मिलता है. इसलिए हरदिन योग करनेसे व्यक्ति मानसिक रूप से शांत और हेल्दी रहता है.

योगकी सहायता से व्यक्ति को उन चीजों को सही करनेकी ताकत मिलती है, जो किस ही हो सकती हैं और उन चीजों को सहने की भी ताकत मिलती हैं, जो किस ही नहीं हो सकती हैं.

योग कोई धर्म नहीं है, ये एक साइंस, साइंस ऑफ़ वेल बीइंग, साइंस ऑफ़ यूथफुलनेस, साइंसऑफ़ इंटेग्रिटिंग बॉडी, माइंडएंड सोल है

जो लोग बहुत अधिक खाना खाते हैं वो लोग योग नहीं कर सकते हैं, जो व्यक्ति बिल्कुल खाना नहीं खाते हैं, उनके लिए भी योगसंभव नहीं है. इसके साथ ही जो बहुत ज्यादा सोते हैं, या फिर बहुत ज्यादा जागते हैं उन के लिए भी योग करना पॉसिबल नहीं है.

इंदिरा गाँधी

मयूरी शितल खोत- द्वितीय वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में पहचान रखनेवाली इंदिरा गाँधी का जीवन परिचय काफी रोचक हैं। उनका इंदु से लेकर इंदिरा और फिर प्रधानमंत्री बनने तक का सफर ना केवल प्रेरणादायी हैं, बल्कि भारत में महिला सशक्तिकरण के इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय भी हैं। उन्होंने १९६६ से लेकर १९७७ तक और १९८० से लेकर मृत्यु तक देश के प्रधानमंत्री का पदभार सम्भाला था।

इंदिरागाँधी जन्म और परिवार

जन्मदिन (Birth date)	१९ नवंबर १९१७
जन्मस्थान (Birth Place)	इलाहबाद, उत्तरप्रदेश
पिता (Father)	जवाहरलाल नेहरू
माता (Mother)	कमला नेहरू
पति (Husband)	फ़िरोज़ गाँधी
पुत्र (Son)	राजीव गाँधी और संजय गाँधी
पुत्रवधुएँ (Son-in-law)	सोनिया गाँधी और मेनका गाँधी
पौत्र (Grand Sons)	राहुल गाँधी और वरुण गाँधी
पौत्री (Grand Daughter)	प्रियंका गाँधी

इंदिरा का जन्म देश की स्वतंत्रता में योगदान देनेवाले मोतीलाल नेहरू के परिवार में हुआ था। इंदिरा के पिता जवाहरलाल एक सुशिक्षित वकील और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय सदस्य थे। वो नेहरूजी की इकलौती सन्तान थी, इंदिरा अपने पिता के बाद दूसरी सर्वाधिक कार्यकाल के लिए कार्यरत रहनेवाली प्रधानमंत्री हैं। इंदिरा में बचपन से ही देशभक्ति भावना थी, उस समय भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन की एक रणनीति में विदेशी ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार करना भी शामिल था। और उस छोटी सी उम्र में, इंदिरा ने विदेशी वस्तुओं की होली जलते देखी थी, जिससे प्रेरित होकर ५ वर्षीय इंदिरा ने भी अपनी प्यारी

गुड़िया जलाने का फैसला किया, क्योंकि उनकी वह गुड़िया भी इंग्लैंड में बनाई गई थी।

इंदिरा गाँधी ने बनाई थी वानर सेना

जब इंदिरा गाँधी १२ वर्ष की थीं, तो उन्होंने कुछ बच्चों के साथ वानर सेना बनाई और उसका नेतृत्व किया। इसका नाम बंदर ब्रिगेड रखा गया था जो कि बंदर सेना से प्रेरित था, जिसने महाकाव्य रामायण में भगवान राम की सहायता की थी। उन्होंने बच्चों के साथ मिलकर भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बाद में इस समूह में ६०,००० युवा क्रांतिकारियों को भी शामिल किया गया, जिन्होंने बहुत से आम-लोगों को संबोधित किया, झंडे बनाए, संदेश दिए और प्रदर्शनों के बारे में जानकारी आम-जनता तक पहुंचाई। ब्रिटिश शासन के होते हुए ये सब करना एक जोखिम भरा उपक्रम था, लेकिन इंदिरा स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने से खुश थी।

इंदिरा गाँधी की शिक्षा

इंदिरा ने पुणे विश्वविद्यालय से मेट्रिक पास कर दिया और पश्चिम बंगाल में शांतिनिकेतन से भी थोड़ी शिक्षा हासिल की, इसके बाद वह स्विट्जरलैंड और लंदन में सोमरविल्ले कॉलेज, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्ययन करने गईं।

१९३६ में, उनकी मां कमला नेहरू तपेदिक से बीमार हो गयी थी, पढाई के दिनों में ही इंदिरा ने स्विट्जरलैंड में कुछ महीने अपनी बीमार मां के साथ बिताये थे, कमला की मृत्यु के समय जवाहरलाल नेहरू भारतीय जेल में थे।

इंदिरा जब इंडियन नेशनल कांग्रेस की सदस्य बनीं, तो उनकी मुलाकात फ़िरोज गाँधी से हुई। फ़िरोज गाँधी तब एक पत्रकार और यूथ कांग्रेस के महत्वपूर्ण सदस्य थे। १९४१ में अपने पिता की असहमति के बावजूद भी इंदिरा ने फ़िरोज गाँधी से विवाह कर लिया था। इंदिरा ने पहले राजीव गाँधी और उसके २ साल बाद संजय गाँधी को जन्म दिया।

जब हमारे सिग्नेचर (हस्ताक्षर), ऑटोग्राफ में बदल जाए तो यह सफलता की निशानी है।

इंदिरा का विवाह फिरोज गाँधी से जरूर हुआ था, लेकिन फिरोज और महात्मा गांधी में कोई रिश्ता नहीं था. फिरोज उनके साथ स्वतंत्रता के संघर्ष में साथ थे, लेकिन वो पारसी थे, जब कि इंदिरा हिन्दू. और उस समय अंतरजातीय विवाह इतना आम नहीं था. दरअसल, इस जोड़ी को सार्वजनिक रूप से पसंद नहीं किया जा रहा था, ऐसे में महात्मा गांधी ने इस जोड़ी को समर्थन दिया और ये सार्वजनिक बयान दिया, जिसमें उनका मीडिया से अनुरोध भी शामिल था. मैं अपमानजनक पत्रों के लेखकों को अपने गुस्से को कम करने के लिए इस शादी में आकर नवयुगल को आशीर्वाद देने के लिए आमंत्रित करता हूँ और कहा जाता है कि महात्मा गांधी ने ही राजनीतिक छवि बनाये रखने के लिए फिरोज और इंदिरा को गाँधी लगाने का सुझाव दिया था.

स्वतंत्रता के बाद इंदिरा गांधी के पिता जवाहरलाल नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री बने थे, तब इंदिरा अपने पिता के साथ दिल्ली शिफ्ट हो गयी थी. उनके दोनों बेटे उनके साथ लेकिन फिरोज ने तब इलाहाबाद रुकने का ही निर्णय किया था, क्योंकि फिरोज तब दी नेशनल हेरल्ड में एडिटर का काम कर रहे थे, इस न्यूज पेपर को मोतीलाल नेहरू ने शुरू किया था.

इंदिरा का राजनीतिक करियर

नेहरू परिवार वैसे भी भारत के केंद्र सरकार में मुख्य परिवार थे, इसलिए इंदिरा का राजनीति में आना ज्यादा मुश्किल और आश्चर्यजनक नहीं था. उन्होंने बचपन से ही महात्मा गांधी को अपने इलाहाबाद वाले घर में आते-जाते देखा था, इसलिए उनकी देश और यहाँ की राजनीति में रूचि थी.

१९५१-५२ के लोकसभा चुनावों में इंदिरा गांधी ने अपने पति फिरोज गांधी के लिए बहुत सी चुनावी सभाएं आयोजित की और उनके समर्थन में चलने वाले चुनावी अभियान का नेतृत्व किया. उस समय फिरोज रायबरेली से चुनाव लड़ रहे थे. जल्द ही फिरोज सरकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध बड़ा चेहरा बन गए. उन्होंने बहुत से भ्रष्टाचार और भ्रष्टाचारियों का पर्दाफाश किया, जिसमे बीमा कम्पनी और वित्त मंत्री टीटी कृष्णामचारी का नाम शामिल था. वित्त मंत्री को तब जवाहरलाल नेहरू का करीबी माना जाता था.

इस तरह फिरोज राष्ट्रीय स्तर की राजनीति की मुख्य

धारामें सामने आये, और अपने थोड़े से समर्थकों के साथ उन्होंने केंद्र सरकार के साथ अपना संघर्ष जारी रखा, लेकिन ८ सितम्बर १९६० को फिरोज की हृदयघात से मृत्यु हो गई.

कांग्रेस प्रेसिडेंट के रूप में इंदिरा

१९५९ में इंदिरा को इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी का प्रेसिडेंट चुना गया था. वो जवाहरलाल नेहरू की प्रमुख एडवाइजर टीम में शामिल थी. २७ मई १९६४ को जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु के बाद इंदिरा ने चुनाव लड़ने का निश्चय किया और वो जीत भी गयी. उन्हें लालबहादुर शास्त्री की सरकार में इनफार्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग मंत्रालय दिया गया.

प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार

११ जनवरी १९६६ को लालबहादुर शास्त्री के ताशकंद में देहांत के बाद अंतरिम चुनावों में उन्होंने बहुमत से विजय हासिल की, और प्रधानमंत्री का कार्यभार संभाला. प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियां प्रिंसीपल पस के उन्मूलन के लिए प्रिंसिपल राज्यों के पूर्व शासकों और चार प्रीमियम तेल कंपनियों के साथ भारत के चौदह सबसे बड़े बैंकों के १९६९ राष्ट्रीयकरण के प्रस्तावों को पास करवाना था. उन्होंने देश में खाद्य सामग्री को दूर करने में रचनात्मक कदम उठाए और देश को परमाणु युग में १९७४ में भारत के पहले भूमिगत विस्फोट के साथ नेतृत्व किया.

भारत-पाकिस्तान युद्ध १९७१ में इंदिरा गाँधी की भूमिका

वास्तव में १९७१ में इंदिरा को बहुत बड़े संकट का सामना करना पड़ा. युद्ध की शुरुआत तब हुयी थी, जब पश्चिम पाकिस्तान की सेनाएं अपनी स्वतंत्रता आंदोलन को कुचलने के लिए बंगाली पूर्वी पाकिस्तान में गईं. उन्होंने ३१ मार्च को भयानक हिंसा के खिलाफ बात की, लेकिन प्रतिरोध जारी रहा और लाखों शरणार्थियों ने पड़ोसी देश भारत में प्रवेश करना शुरू कर दिया.

इन शरणार्थियों की देखभाल में भारत में संसाधनों का संकट होने लगा, इस कारण देश के भीतर भी तनाव काफी बढ़ गया. हालांकि भारत ने वहाँ के लिए संघर्षरत स्वतंत्रता सेनानियों का समर्थन किया. स्थिति तब और भी जटिल हो गई, जब अमेरिका के राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने चाहा, कि संयुक्त राज्य अमेरिका पाकिस्तान के पक्ष में खड़ा हो, जब कि इधर चीन

पहले से पाकिस्तान को हथियार दे रहा था, और भारत ने सोवियत संघ के साथ शांति, दोस्ती और सहयोग की संधि पर हस्ताक्षर किए थे।

पश्चिमी पाकिस्तान की सेना ने पूर्वी पाकिस्तान में आम-जन पर अत्याचार करने शुरू कर दिए, जिनमें हिन्दुओं को मुख्य रूप से लक्षित किया गया, नतीजतन, लगभग १० मिलियन पूर्व पाकिस्तानी नागरिक देश से भाग गए और भारत में शरण मांगी। भारी संख्या में शरणार्थी होने की स्थिति ने इंदिरा गांधी को पश्चिमी पाकिस्तान के खिलाफ आजामी लीग के स्वतंत्रता के संघर्ष को समर्थन देने के लिए प्रेरित किया।

भारत ने सैन्य सहायता प्रदान की और पश्चिम पाकिस्तान के खिलाफ लड़ने के लिए सैनिकों को भी भेजा। ३ दिसम्बर का पाकिस्तान ने जब भारत के बेस पर बमबारी की तब युद्ध शुरू हुआ, तब इंदिरा ने बांग्लादेश की स्वतंत्रता के महत्व को समझा, और वहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों को शरण देने एवं बांग्लादेश के निर्माण को समर्थन देने की घोषणा की। ९ दिसम्बर को निक्सन ने यूएस के जलपोतों को भारत की तरफ खाना करने का आदेश दिया, लेकिन १६ दिसम्बर को पाकिस्तान ने आत्म-समर्पण कर दिया।

अंततः १६ दिसंबर १९७१ को ढाका में पश्चिमी पाकिस्तान बनाम पूर्वी पाकिस्तान का युद्ध समाप्त हुआ। पश्चिमी पाकिस्तानी सशस्त्र बल ने भारत के सामने आत्मसमर्पण के कागजों पर हस्ताक्षर किए, जिससे एक नए देश का जन्म हुआ, जिसका नाम बांग्लादेश रखा गया। पाकिस्तान के खिलाफ १९७१ के युद्ध में भारत की जीत ने इंदिरा गांधी की लोक प्रियता को एक चतुर राजनीतिक नेता के रूप में पहचान दिलाई। इस युद्ध में पाकिस्तान का घुटने टेकना ना केवल बांग्लादेश और भारत के लिए, बल्कि इंदिरा के लिए भी एक जीत थी। इस कारण ही युद्ध की समाप्ति के बाद इंदिरा ने घोषणा की कि मैं ऐसी इंसान नहीं हूँ, जो किसी भी दबाव में काम करे, फिर चाहे कोई व्यक्ति हो या कोई देश।

आपातकाल लागू करना

१९७५ में, विपक्षी दलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने बढ़ती मुद्रास्फीति, अर्थव्यवस्था की खराब स्थिति और अनियंत्रित भ्रष्टाचार पर इंदिरा गांधी की अगुवाई वाली केंद्र सरकार के

खिलाफ बहुत प्रदर्शन किया। उसी वर्ष, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया, कि इंदिरागांधी ने पिछले चुनाव के दौरान अवैध तरीके का इस्तेमाल किया था और मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों में इस बात ने आग का काम किया। इस फैसले में इंदिरा को तुरंत अपनी सीट खाली करने का आदेश दिया गया। इस कारण लोगों में उनके प्रति क्रोध भी बढ़ गया। श्रीमती गांधीने २६ जून, १९७५ के दिन इस्तीफा देने के बजाय देश में अशांत राजनीतिक स्थिति के कारण आपातकाल घोषित कर दिया।

आपातकाल के दौरान उन्होंने अपने सभी राजनीतिक दुश्मनों को कैद करवा दिया, उस समय नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों को रद्द कर दिया गया, और प्रेस को भी सख्त सेंसरशिप के तहत रखा गया था। गांधीवादी समाजवादी जया प्रकाश नारायण और उनके समर्थकों ने भारतीय समाज को बदलने के लिए 'कुल अहिंसक क्रांति' में छात्रों, किसानों और श्रम संगठनों को एकजुट करने की मांग की। बाद में नारायण को भी गिरफ्तार कर लिया गया और जेल भेजा दिया गया।

१९७७ के प्रारम्भ में आपातकाल को हटाते हुए इंदिरा ने चुनावों की घोषणा की, उस समय जनता ने आपातकाल और नसबंदी अभियान के बदले में इंदिरा का समर्थन नहीं किया।

सत्ता का छीनना और विपक्ष की भूमिका में आना

माना जाता है कि आपात स्थिति के दौरान, उनके छोटे बेटे संजय गांधी ने देश को पूर्ण अधिकार के साथ चलाने की कोशिश की और झोपड़पट्टी के घरों को सख्ती से हटाने का आदेश दिया, और एक बेहद अलोकप्रिय नसबंदी कार्यक्रम ने इंदिरा को विपक्ष में कर दिया था। लेकिन फिर भी १९७७ में, इंदिरा ने आत्मविश्वास से कहा, कि उन्होंने विपक्ष को तोड़ दिया है, उन्होंने चुनाव की मांग की। मोरारजी देसाई और जय प्रकाश नारायण के नेतृत्व में उभरते जनता दल गठबंधन ने उन्हें हराया था। पिछली लोकसभा में ३५० सीटों की तुलना में कांग्रेस केवल १५३ लोकसभा सीटें जीतने में कामयाब रही।

प्रधानमंत्री के रूप में दूसरा कार्यकाल

जनता पार्टी के सहयोगियों के मध्य के आंतरिक संघर्ष का इंदिरा ने फायदा उठाया था। उस दौरान इंदिरा गांधी को संसद से निष्कासित करने के प्रयास में, जनता पार्टी की सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश दे दिया था। हालांकि, उनकी

ये रणनीति उन लोगों के लिए विनाशकारी सिद्ध रही और इससे इंदिरा गांधी को सहानुभूति मिली. और आखिर में १९८० के चुनावों में, कांग्रेस एक विशाल बहुमत के साथ सत्ता में लौट आई और इंदिरा गांधी एक बार फिर भारत के प्रधानमंत्री बन गयी. वास्तव में जनता पार्टी उस समय स्थिर अवस्था में भी नहीं थी, जिसका पूरा फायदा कांग्रेस और इंदिरा को मिला था.

१९८१ के सितम्बर महीने में एक सिख आतंकवादी समूह खालिस्तान की मांग कर रहा था, और इसी आतंकवादी समूह ने अमृतसर के स्वर्णमंदिर परिसर में प्रवेश किया था. मंदिर परिसर में हजारों नागरिकों की उपस्थिति के बावजूद, इंदिरा गांधी ने सेना को ऑपरेशन ब्लू स्टार करने के लिए पवित्र मंदिर में जाने का आदेश दे दिया. सेनाने टैंक और भारी तोपखाने का सहारा लिया, हालांकि सरकार ने इस तरह आतंकवादी खतरे को कम करने की बात की थी, लेकिन इससे कई निर्दोष नागरिकों का जीवन छीन गया. इस ऑपरेशन को भारतीय राजनीतिक इतिहास में एक अद्वितीय त्रासदी के रूप में देखा गया था. हमले के प्रभाव ने देश में सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि की. कई सिखों के विरोध में सशस्त्र और नागरिक प्रशासनिक कार्यालय से इस्तीफा दे दिया और कुछने अपने सरकारी पुरस्कार भी वापस लौटा दिए. इस पूरे घटनाक्रम से तात्कालिक परिस्थितियों में इंदिरा गांधी की राजनीतिक छवि भी खराब हो गई थी.

इंदिरा गांधी हत्या

३१ अक्टूबर १९८४ को गांधी के बॉडीगार्ड सतवंत सिंह और बिनत सिंह ने स्वर्णमंदिर में हुए नरसंहार के बदले में कुल ३१ कुलेट मारकर इंदिरा गांधी की हत्या कर दी. ये घटना सफदरगंज रोड नयी दिल्ली में हुई थी.

इंदिरा गांधी से जुड़ी रोचक बातें

ये माना जाता है कि इंदिरा गांधी अपनी इमेज बनाए रखने पर काफी ध्यान देती थी. १९६५ के दौरान भारत-पाकिस्तान के युद्ध के समय वो श्रीनगर में छुट्टियाँ मना रही थी. सुरक्षा अधिकारी के ये बताने पर कि पाकिस्तान उनके होटल के काफी करीब आग ये हैं, वो ये जानने के बावजूद भी वो वही रुकी रही. गांधी ने वहाँ से हटने से मना कर दिया, इस बात ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मीडिया का ध्यान खींचा, जिससे विश्वपटल पर

उनकी पहचान वो भारत की सशक्त महिला के रूप में बनी.

केथरीन फ्रैंक ने अपनी किताब दी लाइफ ऑफ इंदिरा नेहरू गाँधी में लिखा है कि इंदिरा का पहला प्यार शान्तिनिकेतन में उनके जर्मन टीचर थे, उसके बाद जवाहरलाल नेहरू के सेक्रेटरी एम.ओ.मथाई (O. Mathai) से उनके निकट-संबंध रहे. उसके बाद उनका नामयोग के अध्यापक धीरेन्द्र ब्रह्मचारी और आखिर में कांग्रेस नेता दिनेश सिंह के साथ भी जोड़ा गया. लेकिन इन सबसे भी इंदिरा के विरोधी उनकी राजनीतिक छवि को नुकसान नहीं पहुंचास के, और उनके आगे बढ़ने का मार्ग नहीं रोक सके.

१९८० में संजय की प्लेनक्रैश में मृत्यु के बाद गांधी परिवार में तनाव बढ़ गया था और १९८२ आते आते इंदिरा और मेनका गांधी के मध्य कड़वाहट काफी बढ़ गयी. इसका रणइंदिरा ने मेनका को घर छोड़ने का कह दिया, लेकिन मेनका ने भी बैग के साथ अपने घर छोड़कर जाते समय की फोटो मीडिया में दे दी. और जनता के समाने ये घोषणा भी की, उन्हें नहीं पता कि उन्हें घर से क्यों निकाला जा रहा है. वो अपनी माँ से भी ज्यादा अपनी सास इंदिरा को मानती रही हैं. मेनका अपने साथ अपना पुत्र वरुण भी लेकर गयी थी और इंदिरा के लिए अपने पोते से दूर होना काफी मुश्किल रहा था.

२० वी शताब्दी में महिला नेताओं की संख्या कम थी, जिनमें इंदिरा का नाम शामिल था. लेकिन फिर भी इंदिरा की एक मित्र थी मार्गरेट थैचर. ये दोनों १९७६ में मिली थी. और ये जानते हुए भी की इंदिरा पर आपतकाल के दौरान तानाशाही का इल्जाम है और वो अगला चुनाव हार गयी हैं, मार्गरेट ने इंदिरा का साथ नहीं छोड़ा. ब्रिटेन की प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर इंदिरा की समस्याओं को अच्छे से समझती थी. थैचर भी इंदिरा की तरह ही बहादुर एवं सशक्त प्रधानमंत्री थी, जिसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आतंकी हमले की आशंका होते हुए भी वो इंदिरा के अंतिम-संस्कार में आई थी. उन्होंने इंदिरा की आसामयिक मृत्यु पर राजीव को संवेदनशील पत्र भी लिखा था.

इंदिरा के प्रधानमंत्री बनने पर कांग्रेस में ही एक वर्ग था, जो किसी महिला के हाथ में शक्ति को बर्दाश्त नहीं कर सकता था, फिर भी इंदिरा ने ऐसे सभी व्यक्तियों और पारम्परिक सोच

के कारण राजनीति में आनेवाली समस्त बाधाओं का डटकर सामना किया।

इंदिरा ने देश में कृषि के क्षेत्र में काफी सराहनीय काम किये थे, इसके लिए उन्होंने बहुतसी नई योजनाएं बनाई और कृषि सम्बंधित कार्यक्रम आयोजित किए। इसमें विविध फसलें उगाना और खाद्य सामग्री को निर्यात करना जैसे मुख्य उद्देश्य शामिल थे। उनका लक्ष्य देश में रोजगार सम्बंधित समस्या को कम करना और अनाज उत्पादन में आत्म-निर्भर बनना था। इन सबसे ही हरित-क्रान्ति की शुरुआत हुई थी।

इंदिरा गांधी ने भारत को आर्थिक और औद्योगिक सक्षम राष्ट्र बनाया था, इसके अलावा उनके कार्यकाल में ही विज्ञान और रिसर्च में भी भारत ने बहुत प्रगति की थी। उस दौरान ही पहली बार एक भारतीय ने चाँद पर कदम रखा था, जो कि देश के लिए काफी गर्व का विषय था।

इंदिरा गांधी के नाम पर धरोहर

नई दिल्ली में उन के घर को म्यूजियम बनाया गया है, जिसे इंदिरा गांधी मेमोरियल म्यूजियम के नाम से जाना जाता है। इसके अलावा उनके नाम पर मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल भी हैं।

बहुत सी यूनिवर्सिटी जैसे इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (इग्रू), इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी (अमरकंटक), इंदिरा गांधी टेक्निकल यूनिवर्सिटी फॉर वीमेन, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय (रायपुर) हैं। इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ डेवलपमेंट रिसर्च (मुम्बई), इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी, इंदिरा गाँधी ट्रेनिंग कॉलेज, इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंस, इंदिरा गांधी इंस्टिट्यूट ऑफ़ डेंटल साइंस इत्यादि कई शैक्षिक संस्थाएं हैं।

देश की राजधानी दिल्ली के इंटरनेशनल एअरपोर्ट का नाम भी इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल एअरपोर्ट है। देश का सबसे मशहूर समुद्री ब्रिज पंबन ब्रिज का नाम भी इंदिरा गाँधी रोड ब्रिज है। इसके अलावा देश भर के कई शहरों में बहुत सी सड़कों और चौराहों का नाम भी उनके नाम पर है।

इंदिरा गाँधी के अवार्ड्स

१. इंदिरा गांधी को १९७१ में भारत रत्न से सम्मानित

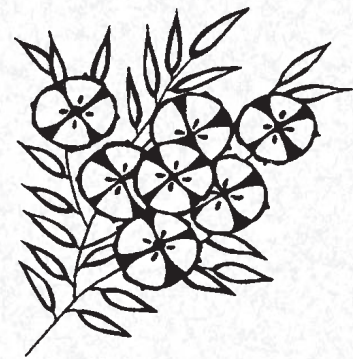
किया गया था। १९७२ में उन्हें बांग्लादेश को आज़ाद करवाने के लिए मेक्सिकन अवार्ड से नवाजा गया। फिर १९७३ में सेकंड एनुअल मेडल एफएओ (2nd -annual Medal, F-O) और १९७६ में नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी में साहित्य वाचस्पति का अवार्ड दिया गया।

२. इंदिरा को १९५३ में यूएसए में मदर्स अवार्ड भी दिया गया, इसके अलावा डिप्लोमेसी के साथ बेहतर कार्य करने के लिए 'इसलबेला डी' एस्टे अवार्ड ऑफ़ इटली (Isabella d'Este -ward of Italy) मिला। उन्हें येल यूनिवर्सिटी के होलेंड मेमोरियल प्राइज से भी सम्मानित गया।

३. १९६७ और १९६८ में फ्रेंच इंस्टिट्यूट ऑफ़ पब्लिक ओपिनियन के पोल (Poll) के अनुसार वो फ्रेंच लोगों द्वारा सबसे ज्यादा पसंद की जानेवाली महिला राजनेता थीं।

४. १९७१ में यूएसए के विशेष गेलप पोल सर्वे (Gallup Poll Survey) के अनुसार वो दुनिया की सबसे ज्यादा सम्मानीय महिला थीं। इसी वर्ष जानवरों की रक्षा के लिए अर्जेटाइन सोसाइटी ने उन्हें डिप्लोमा ऑफ़ ऑनर से भी सम्मानित किया।

इंदिरा गाँधी का जीवन विश्व में भारत की महिला को एक सशक्त महिला के रूप में पहचान दिलानेवाला रहा है। हालांकि उनके व्यक्तित्वको दो पक्षों से समझा जाता रहा है और उनके समर्थकों के साथ ही विरोधियों की भी संख्या काफी है। उनके लिए गये कई राजनीतिक और सामाजिक फैसले भी अक्सर चर्चा का विषय बने रहते हैं लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इंदिरा गांधी के कार्यकाल में भारत ने विकास के कई आयाम स्थापित किये थे, और उन्होंने विश्व पटल पर भारत की छवि को बदल कर रख दिया था।



समय का सदुपयोग

ओमकार सुरेश चौगुले - द्वितीय वर्ष, यांत्रिकी अभियांत्रिकी

आम जिन्दगी का सबसे बहुमूल्य शब्द है, समय । यह एकमात्र शब्द है, जो व्यक्ति के जन्म से उसकी अंतिम सास तक उसके साथ होता है । परन्तु बदलते ज़माने के साथ इस शब्द का महत्व, लोगों ने बदल सा दिया है । बहुत ही चर्चित वाक्य है - **'हमे समय नहीं मिला'**

कभी यह सोचा है कि, ऐसा क्यों हो रहा है । यदि कभी इस विषय पर सोचा जाये, तब हमे पता चलेगा की बदलते वक्त के साथ हमने खुद को इतना बदल दिया है कि, हम एक पल पीछे पलट कर देखे तो पता चलेगा कि, हमने तो अपनों को ही खो दिया है । या यह भी कहा जा सकता है कि, हमने स्वयं को खो दिया है तो भी, अतिशयोक्ति ना होगी ।

क्या समय में कोई परिवर्तन हुआ है? नहीं, परिवर्तन इंसान में हुआ है । बदलती सदी के साथ इंसान बदल गया है । एक बार हम सोचे कि, पहले जब हमारे पूर्वज हुआ करते थे तब, कभी इस तरह की समस्या आती थी? २४ घंटे तब भी थे, आज भी वो ही २४ घंटे है । समय के इस चक्र में परिवर्तन नहीं हुआ है । वह तब से अब तक, निरंतर चल रहा है ।

बीसवी सदी पूर्व, कभी ऐसी समस्या नहीं आती थी कि, लोगो के पास समय नहीं हुआ करता था । जब कि, तब सुख-सुविधा की कोई वस्तु उपलब्ध नहीं हुआ करती थी । मीलो दूर यात्रा करने के लिये ना ही, यातायात के साधन उपलब्ध होते थे, ना ही मनोरंजन के कोई साधन, ना ही विलासिता के कोई और साधन उपलब्ध थे । तब काम करने के लिए रात-रात भर जागना नहीं होता था ।

वास्तव में, तब जीवन ज्यादा सरल हुआ करता था क्योंकि, उस समय व्यक्ति का जीवन घड़ी का गुलाम नहीं था ।

बदलते वक्त के साथ, जैसे-जैसे मशीनों का आविष्कार हुआ, कल-कारखानों का निर्माण हुआ, नौकरी का दौर शुरू

हुआ, समय भागता चला गया । जिन्दगी मानो रेल की पटरी से तेज चलने लगी । पैसे कमाने की इस दौड़ में, सुख-सुविधा का सामान जुटाने में, व्यक्ति ने स्वयं को इतना व्यस्त कर दिया है कि, उसे यह तक नहीं पता कि, जिस परिवार या स्वयं लिए वह यह सब कर रहा है, उनसे तो वो बहुत दूर हो चुका है ।

ऐसा सब क्यों हो रहा है?

क्या सही माइने में मशीन बनाते-बनाते और उस के साथ काम करते हुए हम भी बिल्कुल उसी तरह बन गये है? हमे आज फिर से जरूरत है कि हम कुछ पल के लिए रुके, और देखे की आखिर जो अनमोल जीवन भगवान ने हमे दिया है, हम उसे व्यर्थ न गवाये ।

समय को जानने के लिए बहुत छोटा सा गणित लगाए, सिर्फ एक दिन का -

२४ घंटे

८ घंटे सोने के,

२ घंटे नित्यकर्म के,

६-८ घंटे जॉब के ,

बचा जो समय है, वो हमारे लिए है । मात्र ६-८ घंटे अर्थात्, जिन्दगी के ३०-४० प्रतिशत भाग हमारे हाथ में जो सिर्फ, हमारे लिए है । हम अपने इस जीवन में वह सभी करे, जिसके लिए हमे जन्म मिला है । यह सब तभी होगा जब हम अपने, सही और सुचारू रूप से करेंगे ।

देखा जाये तो, मनुष्य को बहुत छोटी सी जिन्दगी मिली है । उसे व्यर्थ गवाने के बजाये, पूरी सूझ-बुझ के साथ हर एक दिन की योजना बनाकर जिये, इससे हमारी जिन्दगी बहुत आसान और खुशनुमा हो जाएगी ।

कैसे करे अपने समय का सदुपयोग?

ऐसा कहा जाता है कि, जो बीत गई, वो बात गई । बहुत छोटी सी बात है, कि जो भी भूल या गलतिया पहले हुई

जब हम दैनिक समस्याओ से घिरे रहते है तो हम उन अच्छी चीजों को भूल जाते है जो की हम में है।

है, जो समय हमने बर्बाद किया है उनसे कुछ सिखकर आगे कि जिन्दगी को व्यर्थ न गवाए ।

समय के सदुपयोग के महत्वपूर्ण बिन्दु - लक्ष्य तय करे -

समय का सदुपयोग तब ही हो पायेगा, जब हम अपनी जिन्दगी में लक्ष्य तय करेंगे । हमे कब, क्या और कितने समय में, पूरा करना है । बड़े लक्ष्य तक पहुंचने के लिए हमे छोटे-छोटे लक्ष्य तय करने होंगे । जोकि, हर दिन के लिए अलग-अलग हो ।

समय का सदुपयोग करने के लिए हमने लक्ष्य को दो भागो में विभाजित किया है ।

सामान्य लक्ष्य

१. निश्चित लक्ष्य
२. सामान्य लक्ष्य -

लक्ष्य तो तय है । इस समय तक, मेहनत, परिश्रम, कार्यकुशलता बढ़ाकर, कार्य तो पूरा कर ही लेंगे । अर्थात् कार्य तो होगा, परन्तु समय तय नहीं है ।

निश्चित लक्ष्य -

समय के साथ, लक्ष्य भी तय है । हम प्रतिदिन ८ घंटे कार्य करेंगे या हमे साल में २ लाख रुपये कमाएंगे । अर्थात् यह है, निश्चित लक्ष्य । जिसे अपनी उन्नति के साथ जाँचा जा सकता है ।

टाइम मैनेजमेंट करे -

जिन्दगी में हर एक खोई हुई वस्तु जैसे - धन, संपत्तिया और कुछ महत्वपूर्ण सामान भी दुबारा लाया जा सकता है ।

परन्तु, सिर्फ एक समय ही ऐसी बहुमूल्य वस्तु है जो, एक बार जाने के बाद दुबारा नहीं मिलती है । हमारा एक-एक पल बहुत की कीमती है, इसे ऐसे ही व्यर्थ न गवाए । हर घंटे का मैनेजमेंट करे ।

इसके लिए टाइम टेबल बनाये । और एक डायरी मेंटेन करे कुछ समय तक उसमे रात में पूरी दिनचर्या लिखे खुद पता चलेगा की कहा और कितना समय बर्बाद किया है हमने । उस बर्बाद समय की भी प्लानिंग कर उसे उपयोग करे ।

प्राइम टाइम में काम करे, पूरे दिन में एक टाइम ऐसा

होता है जब हम पूरी तरह से एक्टिव होते है जैसे - सुबह । अर्थात्, सुबह में महत्वपूर्ण कार्य समय के अनुसार तय कर, उसे करे ।

काम का महत्व समझे -

लक्ष्य के अनुसार काम बाटे । काम के महत्व को समझे और उसकी प्राथमिकता (झीळीळी) तयकरे । छोटे-छोटे काम की लिस्ट बनाये और जिस काम को पहले करना है उसे, समय के साथ तय करे । काम के महत्व के साथ अपने समय की भी बचत करते हुए चले । जैसे -

आलस्य न करे ।

काम को न टाले ।

लालच किसी चीज़ की न रखे ।

आज का कार्य, कल पर न छोड़े ।

इंटरनेट व मोबाइल जैसी आधुनिक तकनीकीयो का उपयोग आवश्यकतानुसार ही करे ।

यह सभी चीज़े हमारे समय को व्यर्थ करती है ।

समय सीमा तय करे -

समय के सदुपयोग के लिए बहुत आवश्यक है कि, हम हर काम के लिए समयसीमा (उश्रारवश्रळपश) तय करे । एक निश्चित समय के तक हमे अपना कार्य पूर्ण करना है तभी जिंदगी में आगे बढ़ेंगे ।

समय के सदुपयोग के लिये ऐसी बहुत सी बातें है जिन्हें समय के साथ सीखते हुए, समय के साथ जिन्दगी में ठोकर खाते हुए, कदम-कदम पर उसी समय की प्लानिंग करते हुए निश्चित समय तक अपने लक्ष्य तक जरूर पहुंचेंगे ।

२४ घंटो में आप क्या करते हैं विचार करें

हमें हर दिन २४ घंटे मिलते है १२ घंटे रात के तो १२ घंटे दिन के, अगर हमें समय का सदुपयोग करना है तो यह सोचना पड़ेगा की हम अपने समय यानि जो २४ घंटे मिले है उसका क्या करते हैं? अगर हम सोशल मीडिया पर अपने जीवन का अहम समय बर्बाद कर रहे हैं तो अपनी इस आदत को अभी बदल लेंवे. अन्यथा आनेवाला समय आपके लिए बहुत खतरनाक होगा, आप अपने जीवन के सपनों को कभी पूरा नहीं कर पायेंगे. आप अपने समय का सदुपयोग अच्छी किताबें पढकर, स्कूल

की पढाई करके या फिर सीखने में जो आपके काम आये ऐसा करके अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं. अपनी आदत को आज से ही बदले ताकि आपको कभी किसी तरह की प्रॉब्लम ना हो.

समय का सदुपयोग कविता

वक्त बड़ा बलवान हैं
पलके झपके शाम हैं
वक्त कभी ठहरता नहीं
दो पल को सुस्ताता नहीं
जो भागे वक्त के आगे पछताता हैं
रह जाये पीछे वो भी घबराता हैं
जो साथ में कदम मिलाता हैं
वही ऊँचे शिखर को पाता हैं
पल में हंसी के लम्हे
पल में दुःख की शाम दिखाता हैं
वक्त जिसने कदर करी
वही जीवन सुख को पाता हैं

समय का सदुपयोग अनमोल वचन

वक्त के साथ चलने में भलाई हैं ना आगे भागने में,
ना पीछे रहने में ।

समय रहते निर्णय लेने में ही मनुष्य का उद्धार हैं ।

समय का फेरा ही मनुष्य को अच्छे बुरे का ज्ञान देता हैं ।

समय के अनुरूप ढलना ही बुद्धिमता का परिचय हैं ।

समय ही एक ऐसा गुरु हैं जो बिन कहे सब कुछ
सिखा देता हैं ।

सच्चा इन्सान

सच्चा इन्सान वही है,
जो किसी को डराता नहीं है,
ना किसी को फसाँता है,
ना किसी की बुराई करता है,
ना किसी को नचाता है,
और नाही कभी झुठ बोलता है,
ना कोई गुनाह करता है,
ना किसी कि निंदा करता है,
ना किसी को खिंचता है,
ना किसी कि बेइज्जत करता है,
ना किसी पर अन्याय करता है,
नाही पसंद है उसे बहस करना,
नाही हँसी उडाना, बारी लगाना,
नाही होता है वो स्वार्थ का सगा,
सिर्फ बन जाता है वो किसी कि दवा!
तो फिर झाँक कर देखो अपने में
क्या आप सच्चे इन्सान हो ?
है तो क्यों किसी पर अत्याचार करते हो।
क्यों बढ रहा है जुल्म, क्यों हो रहे हैं अपराध।
क्यों हो रहे है दंगे, क्यों हो रहे हैं बलात्कार।
क्यों चल रही है दहशद, क्यों चल रहा हैं भ्रष्टाचार।
क्यों चल रही है कोर्ट-कचेरी, क्यों चल रही है बेकार की नशा
मत करो ये हवा,
बन जाओ किसी की दवा!

भारत के राष्ट्रीय चिन्ह

प्रथमेश उदय कुंभार – प्रथम वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

हर एक राष्ट्र की अपनी एक अलग पहचान होती है, जिसे सर्व सम्मति से सबके द्वारा स्वीकार किया जाता है. राष्ट्र की पहचान, राष्ट्र के प्रतीक एवं वहां के नागरिकों से होती है. देश के राष्ट्रीय प्रतीक का अपना एक इतिहास, व्यक्तित्व और विशिष्टता होती है. भारत के राष्ट्रीय प्रतीक देश का प्रतिबिम्ब है, जिसे बहुत सोच समझकर चुना गया है. हमारे देश के राष्ट्रीय ध्वज की डिजाईन आजादी के पहले २२ जुलाई १९४७ को चुनी गई थी. हमारे देश भारत के राष्ट्रीय प्रतीक निम्न हैं:

भारत के राष्ट्रीय चिन्ह और उनका अर्थ

१	राष्ट्रीय ध्वज	२	राष्ट्रीय प्रतीक
३	राष्ट्र गान	४	राष्ट्रीय गीत
५	राष्ट्रीय कैलेंडर	६	राष्ट्रीय शपथ
७	राष्ट्रीय फूल	८	राष्ट्रीय फल
९	राष्ट्रीय नदी	१०	राष्ट्रीय वृक्ष
११	राष्ट्रीय जानवर	१२	राष्ट्रीय पक्षी
१३	राष्ट्रीय खेल		

राष्ट्रीय ध्वज (National Flag Of India) :

भारत देश का राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा, भारत देश की शान का प्रतीक है. तिरंगे में तीन रंग की पट्टियाँ समान अनुपात में है. इसमें सबसे उपर गहरा केसरिया रंग है, जो साहस और बलिदान का प्रतीक है. बीच में सफ़ेद रंग की पट्टी शांति और सच्चाई का प्रतीक है. सबसे नीचे हरा रंग विश्वास, समर्थि और हरियाली का प्रतीक है. तिरंगे में बीचों बीच सफ़ेद रंग के उपर नीले रंग से अशोक चक्र बना हुआ है. जिसने २४ धारियां है. ये ध्वज स्वराज ध्वज की तरह है, जिसे पिंगली वेंकाया ने डिजाईन किया था.

राष्ट्रीय प्रतीक (National Emblem of India) -

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह सारनाथ के अशोक में सिंह की अनुकृति है. गोलाई में बनी इस आकृति में चार सिंह के मुंह है, जो एक दुसरे को पीठ दिखाए हुए बने है. ये आकृति शक्ति,

साहस और जीत का प्रतीक है. इसके साथ ही इसमें नीचे की ओर एक हाथी, एक घोड़ा, एक बैल और एक शेर की आकृति बनी हुई है, इसके बीच में अशोक चक्र भी बना हुआ है. २६ जनवरी १९५० को जब देश का संविधान लागु हुआ था, तब इसे देश का राजकीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया था. इसे एक ही पत्थर पर नक्काशी करके बनाया गया है. इसके नीचे 'सत्यमेव जयते' लिखा हुआ है, जिसे हिन्दू वेद से लिया गया है. यह आज भी सारनाथ के संग्रहालय में सुरक्षित रखा है, इस आकृति के सुपर धर्म चक्र भी बना हुआ है.

राष्ट्रगान (National Anthem of India) -

हमारे देश का राष्ट्रगान 'जनगणमण' देश की आन वान शान है. यह संस्कृत, बंगाली में महान लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर जी ने लिखा था. रवीन्द्रनाथ टैगोर जी जीवनी के बारे में यहाँ पढ़ें. इसे सबसे पहले कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मीटिंग में २७ दिसम्बर १९११ को गाया गया था. इसे अधिकारिक रूप से राष्ट्रगान के रूप में मान्यता २४ जनवरी १९५० को मिली थी. उस समय बंगाली गाना 'वंदेमातरम्' का गैर हिन्दुओं के विरोध का सामना करना पड़ रहा था, जिसके बाद जनगणमण को राष्ट्रगान घोषित किया गया. राष्ट्रगान को गाते समय कुछ नियमों का पालन करना चाहिए, वे इस प्रकार है -

१. राष्ट्रगान को जब भी गाया या बजाया जाये, श्रोताओं का खड़ा होना अनिवार्य है.
२. राष्ट्रगान को गाने या बजाने से पहले सुचना देना अनिवार्य है.
३. झंडा बंधन के बाद राष्ट्रगान गाना अनिवार्य है.
४. किसी भी कार्यक्रम में राष्ट्रपति के आने एवं जाने पर राष्ट्रगान गाया जाता है.
५. परेड की सलामी, सेना के कार्यक्रम के द्वारा राष्ट्रगान गाया जाता है.
६. विद्यालय, सरकारी कार्यालयों में दिन की शुरुवात राष्ट्रगान के द्वारा की जा सकती है.

जब कोई राष्ट्र हथियार युक्त देशो से घिरा हो, तो उसे भी हथियार युक्त होना पडेगा।

७. राष्ट्रगान की महिमा, गौरव, आदर का ज़िम्मा हर एक नागरिक का होता है.

राष्ट्रीय गीत (National Song of India) -

देश का राष्ट्रीय गीत संस्कृत में बंकिमचन्द्र चटोपाध्य द्वारा लिखा गया था. स्वतंत्रता प्राप्ति की लड़ाई के समय, ये गाना सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रेरणा देता था, उह उनमें नयी उर्जा भर देता था. भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में यहाँ पढ़ें. शुरुवात में वंदेमातरम् राष्ट्रीय गान हुआ करता था, लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात जनगणमण को राष्ट्रीय गान घोषित किया गया. लेकिन इसके बावजूद वंदेमातरम् को जनगणमण जितना सम्मान प्राप्त है. सबसे पहले ये गीत १८९६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सेशन में रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा बजाया गया था. २००३ में हुए एक पोल के दौरान इसे दुनिया के १० मोस्ट पसंदीदा गानों के रूप में स्थान प्राप्त है. २४ जनवरी १९५० को इसे राष्ट्रीय गीत का दर्जा मिला था. संविधान लागु के समय राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा था कि 'वंदेमातरम् गाना एक एतिहासिक गाना है, जिसने स्वतंत्रता की लड़ाई में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसे जनगणमण जितना अधिकार मिलना ही चाहिए

राष्ट्रीय कैलेंडर (National Calendar of India) -

साका कैलेंडर को राष्ट्रीय कैलेंडर का दर्जा प्राप्त है. इसे कैलेंडर कमिटी द्वारा १९५७ में बनाया गया था, जिसे भारतीय पंचाग की मदद से तैयार किया गया है. इसमें हिन्दू धार्मिक कैलेंडर के अलावा खगोल डाटा, समय भी लिखित है.

राष्ट्रीय शपथ (National Pledge) -

इसे तेलगु में प्यदिमर्सी वेंकट सुब्बा राव द्वारा १९६२ में लिखा गया था. इसे २६ जनवरी १९६५ से सभी स्कूलों में निर्धारित रूप से गाये जाने का प्रावधान बनाया गया.

राष्ट्रीय फूल (National Flower of India) -

भारत देश का राष्ट्रीय फूल कमल (Lotus) है. इसका प्राचीन भारत के इतिहास में भी विशेष स्थान है. कमल का फूल एक बहुत गहरा सन्देश देता है, जिस तरह यह कीचड में खिल कर पानी में तैरता रहता है, और कभी नहीं सूखता है. वैसे ही इन्सान को लगातार काम करते रहना चाइये, लेकिन उसके परिणाम की चिंता नहीं करनी चाहिए. यह हिन्दू मान्यता के अनुसार धन की देवी लक्ष्मी का सिंहासन है, जो धन, समृद्धि का प्रतीक है.

राष्ट्रीय फल (National Fruit of India) -

फलों के राजा कहे जाने वाले आम को भारत देश का राष्ट्रीय फल कहा जाता है. भारत में इसकी १०० से भी ज्यादा वैरायटी मिलती है.

राष्ट्रीय नदी (National River of India) -

भारत की प्रसिध्द पवित्र नदी गंगा को राष्ट्रीय नदी के नाम से सम्मानित किया गया है. इस विशाल नदी गंगा से हिन्दुओं की बहुत सी मान्यता जुड़ी हुई है, वे लोग उन्हें माता के समान पूजते है. इस पवित्र नदी में नहाने से सारे पाप धुल जाते है.

राष्ट्रीय वृक्ष (National Tree of India) -

भारत का राष्ट्रीय वृक्ष बरगद है. यह पेड़ बहुत विशाल रूप में बड़ा होता है. यह पेड़ की बहुत लम्बी उम्र होती है, इसलिए इसे अमर पेड़ माना जाता है. भारत में हिन्दू इस पेड़ की पूजा भी करते है.

राष्ट्रीय जानवर (National Animal of India) -

जंगल का राजा शेर को भारत का भी राष्ट्रीय जानवर कहा जाता है. यह भारत की समृद्धि, ताकत, फुर्ती एवं अपार शक्ति को दिखाता है. इसे राष्ट्रीय जानवर के तौर पर अप्रैल १९७३ में घोषणा की गई थी. उस समय इसका उद्देश्य प्रोजेक्ट टाइगर से जुड़ा हुआ था, जिसके अंतर्गत शेरों को बचाने का सन्देश सबको दिया जाता है.

राष्ट्रीय पक्षी (National Bird of India) -

भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर है. मोर उज्वल रंग की एकता का प्रतिनिधित्व करता है, साथ ही भारतीय संस्कृति को दर्शाता है. इसे १९६३ में राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया था. यह सुंदर मोर देश की विभिन्नता को भी दर्शाता है. यह बाकि देशों की तुलना में भारत देश में बहुत अधिक पाया जाता है.

राष्ट्रीय खेल (National Game of India) -

क्रिकेट की अत्याधिक लोकप्रियता के बावजूद हो की भारत देश का राष्ट्रीय खेल है. १९२८-१९५६ के बीच भारत को ओलिंपिक में ६ बार लगातार गोल्ड पदक मिला था. उस समय भारत ने ओलिंपिक में २४ मैच खेले थे, और सब में विजय प्राप्त की थी. इस समय भारत में हॉकी के खेल को बहुत पसंद किया जाता था, जिस वजह से इसे राष्ट्रीय खेल घोषित किया गया था.

भारतीय युवा और जिम्मेदारी

नम्रता पाटील - द्वितीय वर्ष, मेकॅट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी



भारत देश की रीढ़ की हड्डी युवा वर्ग को कहा जाता है. देश को बनाने के लिए युवा वर्ग मुख्य भूमिका निभाता है. किसी भी देश का भविष्य देश के युवाओं के द्वारा सुंदर बनता है. हमारा भारत देश तो युवाओं का ही देश है, हमारे देश की जनसँख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है. युवा उनका कहा जाता है जिनकी उम्र १५ साल से ४० साल के बीच हो. भारत देश को आजादी दिलाने में मुख्य भूमिका निभानेवाले भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चंद्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस थे. इसके अलावा भी बहुत से स्वतंत्रता संग्रामी थे, जिन्होंने देश के नाम अपनी जान दे दी. भारतीय युवा ने देश को कहाँसे कहाँ पहुँचा दिया है, युवाओं के चलते ही देश ने इतनी तेजी से विकास किया है. लेकिन आज का भारतीय युवा स्वार्थी हो गया है, वो देश की तरक्की के बारे में न सोच कर सिर्फ अपने बारे में सोचता है. भारतीय युवा को अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए.

अब समय आ गया है कि देश के युवा को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी. विकासशील से विकसित देश बनने के लिए उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक सभी विषयों में रूचि लेना होगा. एक मजबूत राष्ट्र विकास के लिए युवाओं में एक फौलादी जिगर, दृढ़ इच्छा शक्ति, पराक्रम, धैर्य, संयम की जबरजस्त मांग होती है. स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 'युवा राष्ट्र की वास्तविक शक्ति हैं'. स्वामी विवेकानंद ने देश के युवा को हमेशा से बढ़ावा दिया, उनके विचार आज भी युवाओं के मन को प्रभावित करते हैं, यही कारण है कि विवेकानंद को कई लोग अपना आदर्श मानते हैं. मॉडर्न भारत बनाने के लिए ये ३ बातों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है - आतंकवाद, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिक असमानताओं

युवाओं की जिम्मेदारी

देश के प्रति जिम्मेदारी - देश में बदलाव के लिए देश

के युवा को देश से प्रेम रखना होगा. देश प्रेम के चलते ही युवा देश की तरक्की के बारे में सोच पायेगा. देश प्रेम दिखाने के लिए युवा को राजनीति में रूचि दिखानी होगी. आज देश की बागडौर वृद्ध लोगों के हाथ में है, कुछ एकाद ही युवा राजनीति में सक्रिय है. जिससे राजनीति बत से बतर होती जा रही है. ये बूढ़े नेता अपनी देखभाल तो सही से कर नहीं पाते हैं, देश की सेवा कैसे करेंगे. देश में युवाओं को देश का एक अच्छा नागरिक भी बनना चाहिए, देश के प्रति जिम्मेदारी जैसे वोट डालना, देश को स्वच्छ रखना, टैक्स भरना, घूस न लेना न देना आदि को समझना चाहिए. एक अच्छा नागरिक वही है, जो खुद भी जिम्मेदार बने, और दुसरे को भी इसके लिए प्रेरित करे.

युवाओं का राजनीति के प्रति आक्रोश के कारण -

राजनीति में ऐसे बहुत से चेहरे हैं, जो राजनीति को मलिन कर रहे हैं. राजनैतिज्ञ में लालच, भ्रष्टाचार, सत्ता के लिए कुछ कर बैठना ये सभी आदत दिखाई देती हैं, जिससे युवाओं को राजनीति से घृणा होती जा रही है.

देश में फैली अनेकों बुराइयों से दूर युवा दुसरे देश में रहना पसंद करते हैं, उन्हें दुसरे देश में विकास के ज्यादा मौके समझ आते हैं.

दुसरे देश वाले भारत के युवाओं को अधिक पैसा देकर वही रहने का मौका देते हैं, क्योंकि विदेशी भी मानते हैं, भारतीय युवा ज्यादा मेहनती होते हैं.

अगर कोई युवा राजनीति में जाता भी है, तो सच्चे मार्ग में चलते हुए उसे सत्ताधारीयों के द्वारा दबा दिया जाता है.

मीडिया कई बार राजनीति का गलत चेहरा सबके सामने लाती है, जिससे युवा देश की राजनीति को दूर से ही गलत समझ लेता है.

देश में युवा आवाज को अनुभव की कमी बताकर हमेशा दबाया जाता है.

माता पिता नहीं चाहते उनका बेटा राजनीति में आकर अपना भविष्य खराब करे, क्योंकि माना जाता है कि जो कम पढ़ा, लिखा होता है, या जिसको पढ़ाई या काम में कोई रूचि नहीं होती है, वही राजनीति में आता है।

माँ बाप भारत देश की राजनीति को देखकर, अपने बच्चे को राजनीति में भेजने से डरते हैं।

देश के युवा जो राजनीति में शौक रखते हैं, वे दूर से बैठकर बस तमाशा देखकर, दूसरों की गलती निकालते हैं, उसे जाकर ठीक करने से डरते हैं। लेकिन कहते हैं कि कीचड़ को साफ़ करने के लिए कीचड़ में उतरना बहुत जरूरी है। उस कीचड़ से आपके ऊपर भी दाग लगेंगे, लेकिन वे अपनी छाप नहीं छोड़ पायेंगे।

युवा आज घर बैठे सोशल मीडिया के द्वारा अपनी आवाज तो बुलंद करने लगा है, ये एक अच्छा भी तरीका है, लेकिन इसके अलावा उसे राजनीति में भी अपना नाम लिखवाना होगा। वैसे आजकल के चुप बैठने वालों में से नहीं है, कोई भी गलत बात होते ही, उसके बारे में सोशल मीडिया में ट्रेंडिंग चालू हो जाती है। लोग अपने अलग अलग विचार उस पर प्रकट करते हैं। किसी चीज को सपोर्ट करने के लिए सोशल मीडिया में आवाज उठाई जाती है। लेकिन ये बात भी सच है किये आवाज कई बार हमारे देश के ऊँचे स्थान पर बैठे नेताओं के कान तक नहीं पहुँचती है। सोशल मीडिया का माध्यम आज भी पूरी तरह से विश्वास करने योग्य नहीं है।

देश के युवा का राजनीति में आने से फायदा -

१. विकसित, सशक्त देश बनेगा
 २. बेरोजगारी, आरक्षण की समस्या हल होगी
 ३. शिक्षा में वृद्धि होगी
 ४. आनेवाला कल देश के लिए बहुत अच्छा होगा
- युवाओं में ज्यादा जोश व एनर्जी होती है, जिससे वे अधिक लगन के साथ काम कर पायेंगे।

युवाओं की सोच एक नयी, विकासवाली होती है, जिससे देश का विकास होना तय है।

नए मॉडर्न इंडिया बनाने के लिए, युवा सोच की बहुत

जरूरत है। युवा अपने युवा भाई बहनों के लिए सोचेगा जिससे बहुत सी परेशानियाँ हल हो जाएँगी।

परिवार के प्रति ज़िम्मेदारी -

आज कई युवा भटक गया है, कई बार सेल्फिश हो जाता है। कुछ लोग बस अपने में ही मस्त रहते हैं, माँ बाप परिवार के प्रति ज़िम्मेदारी समझते ही नहीं हैं। युवा ही है, जो परिवार के खम्बे होते हैं, जो उसे खड़ा करते हैं। वे जिम्मेदार नहीं होंगे तो परिवार भी बिखर जायेगा और जबतक परिवार विकास नहीं करेगा, देश कभी विकास नहीं कर पायेगा।

कुछ ऐसे भी युवा हैं, जो बस काम को ही तवज्जो देते हैं, परिवार को नहीं। माँ बाप के प्रति ज़िम्मेदारी नहीं समझते और उन्हें वृधाश्रम में छोड़ देते हैं। माँ बाप के प्रति ज़िम्मेदारी से कभी नहीं भागना चाहिए। काम के अलावा पुरे परिवार के साथ समय बिताना चाहिए।

समाज के प्रति ज़िम्मेदारी -

युवाओं को सामाजिक भी होना चाहिए। समाज हमारे लिए बनाया गया है, समाज की गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझना चाहिए। लेकिन कभी भी समाज की बातों में आकर गलत निर्णय नहीं लेना चाहिए। लोग क्या कहेंगे, समाज क्या कहेगा यही सोच सोचकर कई बार इन्सान गलत निर्णय ले लेता है, जिससे नुकसान समाज का नहीं, आपका ही होता है।

आज युवा बिना राजनीति में आये भी निभा सकता है अपनी जिम्मेदारी

एक समय था जब लगता था की भारत में सुधार लाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा, आगे आने का मतलब 'राजनीति' हुआ करता था। लेकिन आज का डिजिटल दौर बहुत अलग है। आज युवा अपने घर से भी अपनी जिम्मेदारी निभा सकता है। यहाँ तक की देश के लिए कुछ ऐसे - Apps का निर्माण भी कर सकते हैं जो देश की मदद करें एवं देश के विकास में अपनी अहम भूमिका निभाता हो। अगर आप युवा हैं और राजनीति में नहीं जा सकते तो ऐसा कुछ जरूर करें जो देश के काम आये।

यातायात की समस्या और समाधान

सदाम मुल्लाणी - द्वितीय वर्ष, मेकैट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी

यातायात की समस्या और समाधान निबंध

यातायात या ट्राफिक हमारे जीवन का वो हिस्सा है, जो हमारी ज़िन्दगी को और आसान बनाता है. यातायात के द्वारा आज हम लम्बी दुरी भी आसानी से, कम समय में तय कर लेते हैं. मानव ने हर क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किये हैं, यातायात भी इससे अछुता नहीं है. पहले यातायात के लिए विभिन्न जानवर जैसे ऊँठ, घोड़ा, बैल, हाथी, या फिर मानव निर्मित हाथ गाड़ी, पानी में चलने वाले छोटे जहाज का इस्तेमाल होता है.

इनसे लम्बी दुरी तय करने में महीने भी लग जाते थे. मानव ने विकास किया और विज्ञान के सहारे हमारी ज़िन्दगी को इतना आसान बना दिया. यातायात के साधन बिना अब हम अपनी ज़िन्दगी की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं, क्योंकि हम इसके आदि हो चुके हैं. यातायात से हमें लाभ तो बहुत है, लेकिन ये कई बार हमारे लिए समस्या भी बन जाता है. चलिए आज इससे होने वाली समस्या और उसके समाधान के बारे में बात करते हैं.

यातायातकेसाधन (Major Means of Transport / Traffic)

आज २१ वीं सदी में मानव ने यातायात के तीन मुख्य साधन दिए हैं -

१. वायु यातायात हवाईजहाज, हेलीकाप्टर, जेटप्लेन
२. जल यातायात जहाज, शिप, मोटर बोट, क्रूज
३. सड़क यातायात ६ पहिया वाहन ट्रक, बस, ४ पहिया वाहन कार, जीप, टैक्सी, इसके अलावा ऑटो रिक्शा, हाथरिक्शा, साइकिल आदि. इस सूची मेरे लगाड़ी का मुख्य स्थान है.

वायुयातायात -

विज्ञान के चमत्कार का अनूठा उदाहरण है हवाई जहाज. आसमान में पंक्षियों को उड़ता देख, इन्सान के मन में भी हमेशा से उड़ने की चाह रही है. और इन्सान के मन में एक बार जो

आजाये वो करके ही रहता है. अपनी कल्पना को पर लगा कर उसे हवाई जहाज बना दिया. जिससे किसी भी स्थान में जाना और ज्यादा आसान हो गया. देश विदेश की यात्रा अब किसी के लिए मुश्किल नहीं रही.

वायु यातायात से होने वाली समस्या -

पंक्षियों का जीवन खतरे में आ गया, हवाईजहाज से कई बेकसूर जानें रोज जाती हैं.

वायु प्रदुषण बढ़ने लगा.

हवाईजहाज के निर्माण, उसमें सुख सुविधा देने के लिए अधिक खर्च किया जाने लगा.

बड़े बड़े एअरपोर्ट बनाने के लिए खेतों, वनों को काटा जाने लगा.

इनमें तकनीकी खराबी की वजह से ये क्रेश हो जाते हैं, जिससे मनुष्य की जान के साथ खिलवाड़ होता है.

हवाईजहाज के अलावा लड़ाकू विमान भी बनने लगे, जिसका प्रयोग युद्ध में किया जाने लगा.

वायु यातायात समस्या का समाधान -

हवाई जहाज ऐसा होना चाहिए जिससे वायु प्रदुषण न हो.

युद्ध के लिए इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए.

अच्छे इंजिनियर की नियुक्ति होनी चाहिए, जिससे कोई तकनीकी खराबी न आये.

जल यातायात -

बड़े बड़े गहरे समुद्र पर भी मानव ने यातायात संभव कर दिखाया है. छोटी छोटी नौकाओं ने आज बड़े बड़े जहाज, क्रूज की जगह ले ली है. समुद्र में बड़े बड़े जहाज में घूमना पर्यटकों को भी पसंद होता है. समुद्र में तैरते ये जहाज किसी आलिशान होटल की तरह होते हैं, जिसमें सारी सुख सुविधा होती है. इन

जहाज से एक जगह से दुसरे जगह जाने में समय जरूर लगता है, लेकिन यात्रा काफी रोचक होती है. क्रूज भी आजकल काफी प्रचलित है, जो नदी, तालाब में लोगों को सैर कराते है. क्रूज में आजकल लोग पार्टी भी आयोजित करते है, जिसमें अलग अनुभव होता है. कश्मीर, केरल में तो वोट हाउस होते है, जो किसी झील या तालाब पर होते है, जिसमें जितने दिन चाहो रह सकते हो. बड़े बड़े जहाज आयात नियात का भी अच्छा साधन होते है. एक देश से दुसरे देश बड़े बड़े सामानों को आयात नियात विशाल जहाज के द्वारा ही किया जाता है.

जल यातायात से होने वाली समस्या -

बड़े बड़े जहाज समुद्र में चलते है, कई बार ये खराब हो जाते है, और बीच समुद्र में ही खड़ हो जाते है. इन जहाज में रखा तेल, गैस का श्राव समुद्र में होने लगता है, जिससे समुद्र में रहने वाले जीवों की जान पर खतरा बन जाता है. ऐसे घटना हमें आये दिन न्यूज़ में सुनाई देती है, पिछले साल मुंबई के पास भी ऐसा हुआ था, जिसमें आयल था, जो समुद्र में जा मिला था. इससे लाखों करोड़ों का नुकसान हुआ था.

समुद्र में गंदगी होती है, जिससे प्रकृति को नुकसान होता है.

समुद्र में रहने वाली कई बड़ी प्रजाति विलुप्त होते जा रही है.

जल यातायात की समस्या का समाधान -

लम्बी दुरी तय करने वाले जहाज में तकनिकी खराबी न हो इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए.

जहाज की कैपेसिटी के हिसाब से ही उसमें समान रखना चाहिए.

जहाज से समुद्र में रहने वाले जीव जंतु को नुकसान नहीं होना चाहिए.

सड़क यातायात -

सबसे ज्यादा प्रसिद्ध और सुविधा जनक सड़क यातायात होता है, जो दूर व पास सभी दूरियों को पार करता है. सड़कों में हमेशा २ पहिया या चार पहिया गाड़ी दौड़ती हुई दिखती है. पर्सनल प्राइवेट सभी तरह की गाड़ियाँ होती है.

सड़क यातायात के लाभ -

ट्रेन यातायात का सबसे आसान, आरामदायक, कम खर्चीला साधन है. ट्रेन की शुरुवात भाप इंजन से हुई थी, लेकिन आज ये डीजल, बिजली से चलती है. ट्रेन के द्वारा हजारों किलोमीटर की यात्रा एक साथ हजारों लोग कर पाते है.

भारतीय रेल को और सशक्त बनाने के लिए हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काफी मेहनत कर रहे है. आज हजारों ट्रेन है, जो देश को एक जगह से दूसरी जगह जोड़ रही है. ट्रेन में आराम के लिए एसी कोच भी होता है, साथ ही खाने पीने के भी भरपूर इंतजाम होते है. स्लीपर क्लास में कम पैसे में आप आसानी से जा सकते है. हमारे देश में आज २०० किलोमीटर प्रति घंटे वाली ट्रेन भी है. मेट्रो ट्रेन भी देश के कई हिस्सों में पाई जाती है. साथ ही बुलेट ट्रेन पर भी काम शुरू हो चुका है.

सड़क पर कार, जीप, वैन, बस और अन्य गाड़ियाँ दौड़ती है, जिससे हमारी ज़िन्दगी आसान हो गई है. आज एक से बढकर एक लक्ज़री गाड़ी मार्किट में है. कम कीमत से लेकर करोड़ों की गाड़ी है, जिसे लोग अपनी हैसियत के हिसाब से खरीद सकते है. शहर के अंदर सड़क पर रिक्शा, ऑटो, बाइक, स्कूटर, साइकिल चलती है, जो आम आदमी के बजट में भी आती है, और इससे कम समय में दुरी तय होती है.

ट्रकों, ट्राला, ट्रैक्टर के द्वारा भारी समान को एक स्थान से दुसरे स्थान ले जाया जा सकता है.

सड़क यातायात से होने वाली समस्या -

सड़क यातायात जहाँ हमें बहुत लाभ देता है, लेकिन इससे बहुत सी बड़ी समस्याएं भी होती है.

गाड़ियों से निकलने वाले धुएं से वायु प्रदुषण होता है.

सड़क यातायात के नियम भारत सरकार द्वारा बनाये गए है, लेकिन कई बार लोग उसे फॉलो नहीं करते है. जिससे सड़क दुर्घटना आम हो गई है. देश में हर रोज हजारों लोग सड़क दुर्घटना में मारे जाते है.

ट्रेन के लिए ट्रैक बनाने के लिए बड़े बड़े पहाड़ों, वनों को काटा जाता है, जिससे पर्यावरण पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है.

सड़क यातायात को और जोड़ने के लिए नदियों, समुद्रों पर ब्रिज बनाये जा रहे हैं, जिससे जल भी प्रदूषित होता है।

इन यातायात के साधनों का उपयोग कर करके इन्सान आलसी हो गया है, कम दुरी में भी वो गाड़ी का उपयोग करता है।

गाड़ियाँ बढ़ने से पेट्रोल, डीजल का प्रयोग बढ़ गया है।

सड़क यातायात की सबसे बड़ी समस्या ट्रैफिक जैम है, जिससे बड़े शहर में रहने वाले लोग ज्यादा परेशान होते हैं।

सड़क यातायात से होने वाली समस्या का समाधान -

यातायात नियमों का ज्ञान सभी को होना चाहिए, जिससे सड़क दुर्घटना की दर कम हो सके।

धुएं वाली गाड़ी को नहीं चलाना चाइये, साथ ही हो सके हो कम दुरी के लिए साइकिल का प्रयोग करें, या पब्लिक ट्रासपोर्ट का उपयोग करें। इससे हर गाड़ी में अलग अलग पेट्रोल डीजल भी नहीं लगेगा।

सड़क बनाने के लिए वन तो काटे जाते हैं, लेकिन एक अच्छा नागरिक होने के नाते आपको एक पोधा भी लगाना चाहिए।

यातायात नियम का पालन सभी नागरिक को करना ही चाइये।

यातायात समस्या होने का कारण - बढ़ती जनसंख्या

हमने उपर यातायात समस्या के बारे में जिक्र किया है, यातायात समस्या का कारण एक तरह से देश और दुनिया में बढ़ती जनसंख्या भी है। एक समय था जब लोग पैदल ही अपने गंतव्य तक पहुँच जाते थे। लेकिन जैसे-जैसे दुनिया में जनसंख्या बढ़ती जा रही है यातायात की डिमांड भी बढ़ती जा रही है और आज कल तो हर घर में दो पहिया वाहन है। अगर हमें एक किलोमीटर भी जाना होता है तो हम दो पहिया वाहन का इस्तेमाल करते हैं। इसी वजह से आज यातायात समस्या लगातार बढ़ती जा रही है।

यातायात साधन का लाभ हम तभी ले सकते हैं, जब उसे हम सही ढंग से उपयोग करें। आज हम अगर वातावरण को स्वच्छ रखेंगे, तभी तो अपनी आनेवाली पीढ़ी को हम सुंदर वातावरण दे पायेंगे।

एक शाम तुम्हारे नाम...

सुनहरी सी शाम हो
उसमें हो साथ तेरा,
चलते रहो तुम यूँ ही
थामकर हाथ मेरा।
ना कोई रूसवा हो
ना कोई शिकवा हो,
बस तुम मैं और
साथ में बहकी - सी हवा हो।
चांदणी सी रात हो
चाँद का भी साथ हो,
आँखो से ही सारी बात हो
लफ़्ज़ों का कोई वजूद ना हो।
मुश्किलों में भी
हँसते रहे हम,
साथ जो रहोगे तुम
तो ना होगा कोई गम।
क्योंकी मेरे लिए नहीं
तुम किसी फरिश्ते से कम।
तुम्हारे साथ गुजारी गई
वह एक शाम हमेशा
यादों के पन्नों में सजा लेंगे,
अब अगर मौत भी
सामने आ जाए तो
हँसते-हँसते उसे गले लगा लेंगे...



सौरऊर्जा

अनिकेत वसंत पाटील - प्रथम वर्ष, विद्युत अभियांत्रिकी

भारत एक तेजी से उभरने वाली अर्थव्यवस्था है, जिसमें १०० करोड़ से भी ज्यादा लोग शामिल हैं और जिन्हें ऊर्जा की बड़ी मात्रा में आवश्यकता है। जिसकी पूर्ति भारत सरकार द्वारा विभिन्न नविनीकरणीय और अनविनीकरणीय संसाधनों का उपयोग कर के की जा रही है। हमारा देश बिजली को उत्पन्न करने एवं उसकी खपत करने में विश्व में पांचवे स्थान पर है। हमारे देश में बिजली का उत्पादन हर साल बढ़ रहा है, पर हम इस बात से भी इंकार नहीं कर सकते कि जनसंख्या भी साथ में बढ़ रही है।

देश में बिजली का ५३% उत्पादन कोयले से किया जाता है और ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वर्ष २०४०-२०५० तक ये भी समाप्त हो जाएगा। भारत की ७२% से अधिक जनता गाँवों में निवास करती है और इसमें से आधे गाँव बिना बिजली के ही अपना जीवन यापन कर रहे हैं। अब भारत ऐसी स्थिति में आ गया है कि अब हम ऊर्जा के अधिकाधिक उत्पादन के लिए, ऊर्जा के संरक्षण के क्षेत्र में, उसके नविनीकरण एवं बचाव के लिए कदम उठाए। इस मांग को पूर्ण करने हेतु सौर ऊर्जा का उपयोग सर्वोत्तम उपाय है, जिससे हम ऊर्जा की मांग एवं पूर्ति के बीच सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं।

सौर ऊर्जा क्या है

सामान्य भाषा में सौर ऊर्जा से तात्पर्य सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा से है। सूर्य की किरणों को एक बिंदु पर एकत्रित कर के जब ऊर्जा उत्पन्न की जाती है, तो ये प्रक्रिया सौर ऊर्जा उत्पादन कहलाती है। सौर ऊर्जा अर्थात् सूर्य की किरणों को विद्युत में बदलना, चाहे वह पी. वी. (Photovoltaic) द्वारा प्रत्यक्ष रूप से हो या सी. एस. पी. (Concentrated Solar Power) द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से। सी. एस. पी. में सौर

ऊर्जा उत्पन्न करने हेतु लेंस अथवा दर्पणों और ट्रेकिंग उपकरणों का उपयोग किया जाता है और सूर्य प्रकाश के एक बहुत बड़े भाग को एक छोटी सी किरण पर एकत्रित किया जाता है। सोलर पॉवर प्लांट इसी तरह कार्य करते हैं।

भारत एक उष्ण-कटिबंधीय देश है, जिसके अनेक लाभों में से एक लाभ हमें सूर्य प्रकाश के रूप में भी प्राप्त होता है। उष्ण-कटिबंधीय देश होने के कारण हमारे यहाँ वर्ष भर सौर विकिरण प्राप्त की जाती है, जिसमें सूर्य प्रकाश के लगभग ३००० घंटे शामिल हैं, जोकि ५००० ट्रिलियन kWh के बराबर हैं। भारत के लगभग सारे क्षेत्रों में ४-७ kWh प्रतिवर्ग-मीटर के बराबर हैं, जोकि २३००-३२०० सूर्य प्रकाश के घंटे प्रति वर्ष के बराबर हैं। चूँकि भारत की अधिकांश जनता ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है, अतः वहाँ सौर ऊर्जा की उपयोगिता बहुत है। साथ ही विकास की भी संभावनाएँ हैं और अगर सौर ऊर्जा का उपयोग प्रारंभ होता है, तो वहाँ घरेलू कामों में कंडों एवं लकड़ियों का प्रयोग होने में भी कमी आएगी। जिससे वायु प्रदूषण भी नहीं होगा।

भारत में सौर ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए विशाल कार्यक्षेत्र उपलब्ध है क्योंकि भारत की भूस्थली ऐसे स्थान पर है, जहाँ सूर्य प्रकाश पर्याप्त मात्रा में पहुँचता है। पृथ्वी की सतह पर प्रति वर्ष पहुँचने वाले सूर्य प्रकाश की मात्रा अत्याधिक है। पृथ्वी पर अनेक अनविनीकरणीय पदार्थों, जैसे: कोयले, तेल, प्राकृतिक गैस एवं अन्य खनन द्वारा प्राप्त यूरेनियम पदार्थों का एक वर्ष में जितना उपभोग होता है, उसके दोगुने से भी ज्यादा हर वर्ष सूर्य प्रकाश धरती पर पहुँचता है और व्यर्थ हो जाता है।

सौर ऊर्जा तकनीक

सौर ऊर्जा, सौर विकिरणों एवं सूर्य के ताप के प्रयोग द्वारा एक विकसित तकनीक है। इसके और भी रूप हैं, जैसे - : सौर ताप, सौर विकिरण और कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण, आदि।

मैं उस धर्म को पसंद करता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का भाव सिखाता है।

भारत में सौर ऊर्जा से होने वाले लाभ (Solar power disadvantages)

सौर ऊर्जा से होने वाले फायदों के कारण यह और भी अधिक उचित प्रतीत होता है। इसमें से होने वाले कुछ लाभ निम्न - लिखित हैं -:

सौरऊर्जा कभी खत्म न होने वाला संसाधन है और यह अनविनीकरणीय संसाधनों का सर्वोत्तम प्रतिस्थापन है।

सौरऊर्जा वातावरण के लिए भी लाभकारी है। जब इसे उपयोग किया जाता है, तो यह वातावरण में कार्बन - डाई - ऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैस नहीं छोड़ती, तो वातावरण प्रदूषित नहीं होता।

सौरऊर्जा अनेक उद्देश्यों हेतु प्रयोग की जाती है , जैसे -: उष्णता के लिए, सुखाने के लिए, भोजन पकाने में और बिजली के रूप में, आदि। सौर ऊर्जा का उपयोग कार में, हवाई जहाज में, बड़ी नावों में, उपग्रहों में, केलकुलेटर में और अन्य उपकरणों में भी इसका प्रयोग किया जाना उपयुक्त है।

चूँकि सौर ऊर्जा एक अनविनीकरणीय ऊर्जा संसाधन है। अतः भारत जैसे देशों में जहाँ ऊर्जा का उत्पादन महंगा पड़ता है, तो वहाँ ये संसाधन इसका बेहतरीन विकल्प है।

सौरऊर्जा उपकरण किसी भी स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। यहाँ तक कि ये घर में भी स्थापित किया जा सकता है, क्योंकि यह ऊर्जा के अन्य संसाधनों की तुलना में यह सस्ता भी पड़ता है।

भारत में सौर ऊर्जा से होने वाली हानियाँ (Solar power disadvantages) -:

हम रात को सौर ऊर्जा से बिजली उत्पादन का कार्य नहीं कर सकते हैं।

साथही दिन में भी जब बारिश का मौसम हो या बादल हो तो सौर ऊर्जा के द्वारा बिजली उत्पादन का कार्य नहीं किया जा सकता। इस कारण हम सौर ऊर्जा

पर पूरी तरह से भरोसा नहीं कर सकते।

केवलवही क्षेत्र सौर ऊर्जा उत्पादन करने में सक्षम हो सकते हैं, जहाँ पर्याप्त मात्रा सूर्य प्रकाश आता हो।

सौरऊर्जा उत्पन्न करने के लिए हमें सौर उपकरणों के अलावा इन्वर्टर तथा इसके संग्रहण के लिए बैटरी की आवश्यकता होती है। वैसे तो सौर उपकरण सस्ते होते हैं, परन्तु साथ में उपयोगी इन्वर्टर और बैटरी इसे महंगा बना देते हैं।

सौरउपकरण आकार में बड़े होते हैं, अतः इन्हें स्थापित करने हेतु बड़े क्षेत्रफल की भूमि की जरूरत होती है और एक बार यदि ये उपकरण लग जाये तो वह भू - भाग लम्बे समय के लिए इसी उद्देश्य में काम में लिया जाता है और इसका उपयोग किसी और कार्य में नहीं किया जा सकता।

इसप्रकार उत्पन्न होने वाली ऊर्जा की मात्रा अन्य संसाधनों की तुलना में बहुत ही कम होती है, जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है।

सौरउपकरण नाजुक होते हैं, जिनके रख - रखाव का ध्यान रखना बहुत जरूरी होता है, जिससे इनके बीमा आदि पर व्यय होने से अतिरिक्त लागत भी होती है, जिससे खर्च बढ़ जाता है।

भारत में सौर ऊर्जा (Saur urja in india)-:

भारत में भी सौर ऊर्जा के लाभों को ध्यान में रखकर अनेक प्रोजेक्ट प्रारंभ किये गये हैं -:

भारतके थार मरुस्थल में देश का अब तक का सर्वोत्तम सौर ऊर्जा प्रोजेक्ट प्रारंभ किया गया है, जो अनुमानतः ७०० - २१०० G W ऊर्जा उत्पन्न करने में सक्षम है।

१ मार्च, २०१४ को गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने मध्यप्रदेश के नीमच जिले में देश का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा प्लांट का उदघाटन किया है।

केंद्रसरकार ने 'जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर ऊर्जा परियोजना गच्छड्व' को शुरू कर वर्ष २०२२ तक

२०,००० चय तक ऊर्जा उत्पादन करने का लक्ष्य निश्चित किया है।

सौर उत्पादित वस्तुएँ (Saur urja equipment) :-

सौर ऊर्जा द्वारा तथा इसमें सहायक वस्तुओं व उपकरणों का निर्माण किया गया है, जिसमे से कुछ निम्नानुसार हैं -:

- सोलर पेनल,
- ब्रेनीइको सोलर होम UPS ११००,
- सोलर DC सिस्टम १२०,
- सोलरपावर कंडिशनिंग यूनिट,
- झत ग्रिड कनेक्टेड इन्वर्टर,
- सोलर चार्ज कंट्रोलर -:
- PWM² टेक्नॉलोजी,
- MPPT टेक्नॉलोजी
- सोलर कन्वर्जन किट,
- सोलर शाइन वेव इन्वर्टर,
- सोलर बैटरी,
- सोलर होम लाइटिंग सिस्टम -:
- स्पार्कल ,
- सनग्लो
- सोलर स्ट्रीट लाइटिंग सिस्टम, आदि.

इस प्रकार सौर ऊर्जा हमारे देश में विकसित रूप ग्रहण कर चुकी हैं और हम इससे होने वाले फायदों से लाभान्वित हो रहे हैं।

भारत में सौर उर्जा का गाँवों और शहरों में उपयोग

भारत के गाँवों और शहरों में भी सौर उर्जा का उपयोग अब संभव हो गया है. एक समय था जब भारत के अनेक गाँवों में बिजली नहीं थी. लेकिन तकनीकी विकास और सौर उर्जा की मदद से आज भारत के अनेक गाँवों में बिजली है. हालाँकि आज भी भारत में अनेक गाँव ऐसे है जहाँ पर बिजली नहीं है लेकिन, सौर उर्जा की मदद से गाँवों और शहरों में बिजली उत्पादन काफी तेजी से बढ़ा है और लोग सौर उर्जा की मदद से अपने घर को रोशन करने में सफल हुए है. सौर उर्जा या सोलर पैनल पर सरकार भी भारतियों की काफी मदद कर रही है.

बारीश...

वो कितनी अलग होती है
बिना कुछ बोले किसी को जिम्मेदार
न ठहराकर
अपने मर्जी से गिरती है।

आती हैं पल भर में,
पर गड्डे की पोल खोलती है,
बड़े बड़े नेताओं को,
शरमिंदा करवाती हैं।
वो ना होतो किसान के,
आँख बरसते है,
और प्यासे का दिल,
तरसता है।

वो गुस्सा हो तो,
प्रलय लाती है।
और जिंदगी,
तेहेस-नेहस बनानी है।

वो हर साल कुछ,
ऐसा करती है।
जिसमें वह इतिहास,
बना जाती है।

इस लिए कहते है सब,
पेड पौदे लगाओ।
उसे आने दो,
मत तोडो उसे समझलो।

इक्कीसवीं सदी का भारत

सोफिया समडोळे - प्रथम वर्ष, कृत्रिम बुद्धिमत्ता व
आधारभूत माहितीविज्ञान

वर्तमान में हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। जिस प्रकार उन्नीसवीं सदी को ब्रिटेनका समय कहा जाता है, बीसवीं सदी को अमेरिकन सदी कहते हैं, उसी प्रकार इक्कीसवीं सदी भारत की है। IBM² इंस्टिट्यूट फॉर बिज़नेस वेल्यु की रिपोर्ट ' इन्डियनसेंचुरी ' के अनुसार : भारत एक तेजीसे बदलनेवाली अर्थव्यवस्था है। आनेवाले वर्षोंमें भारत को सबसे अधिक उन्नति करनेवाले देशोंमें शामिल किया गया है।

स्वतंत्रता के पश्चात हमारे देशने विभिन्न क्षेत्रोंमें उन्नतिकी है, जैसे : सामाजिक अर्थव्यवस्था में प्रगति, वैज्ञानिक आविष्कार, सांस्कृतिक रूपमें समृद्धि, शिक्षाके क्षेत्रमें विकास, खेतीके उन्नत तरीके, तकनीकी और विज्ञान का समुचित विकास, चिकित्सा के क्षेत्रमें अनुसंधान, आदि कई क्षेत्र हैं, जिन में अब हम आगे बढ़ चुके हैं।

Digital India (डिजिटल भारत)-

आजके भारत को इक्कीसवीं सदी का भारत कहा गया है, मोदी सरकार के आने के बाद भारतमें डिजिटल क्रांति का भी संचार बहुत ज्यादा हुआ है। जिस तरह ई-कॉमर्स ने भारत में जगह बनाई है ठीक इसी तरह आज भारत में अनेक सरकारी सुविधाओं के लिए हम घर बैठे ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। यहाँ तक की अब तो यह सेवा बैंकिंग क्षेत्रमें भी बढ़ गई है और अनेक डिजिटल बैंक्स भी भारतियों के लिए उपलब्ध है। आगे बढ़ते हुए भारत को डिजिटल योगदान मिलने के बाद भारतमें अनेक तरह के बदलाव आने शुरू हुए है। और हम कह सकते हैं की आनेवाला समय भारत का होगा।

इक्कीसवीं सदी का भारत विभिन्न क्षेत्रोंमें (India in 21st Century in Hindi):

आर्थिक क्षेत्रमें : आज हमारा देश आर्थिक रूपसे पहले की

अपेक्षा कहीं अधिक सक्षम है। हॉवर्ड यूनिवर्सिटी के अर्थशास्त्रियों के अनुसार भारत की विकास दर Growth Rate लगभग 7% है, जो इसे सबसे तेज गति से विकास करनेवाला देश बनाती है और इसी वजह से वर्ष 2024 तक इसे चाइनासे भी आगे ले जाएगी। अगर आज भी देखा जाये, तो भारत का स्थान दूसरा ही है अर्थात् अर्थव्यवस्था के मामले में हम चाइना के बाद विश्वकी सबसे बड़ी आर्थिक शक्ति हैं।

हमारे देश की मोदी सरकार और उने वित्तीय मंत्री मण्डलने अभी हाल ही में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश FDI पॉलिसी को पूर्ण रूपसे अपनी मंजूरी प्रदान की है, जिससे अब कई बाहरी कम्पनियाँ भारतमें बड़े पैमाने पर निवेश करनेमें नहीं हिचकिचाएंगी और जिसका लाभ देश की अर्थव्यवस्था को मिलेगा।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्रमें :

प्राचीन कालसे ही हम चिकित्साके क्षेत्रमें अक्ल रहे हैं, परन्तु उपकरणोंके अभाव में हम पिछड़ गये थे, परन्तु आज स्थिति कुछ और है। हमारे देश में सभी बीमारियों का इलाज उपलब्ध है, साथही उनकी जांचके लिए भी सभी मशीनोंकी व्यवस्था देशमें उपलब्ध कराई गयी है।

स्वतंत्रता के बाद प्रारंभ की गयी प्रथम पंचवर्षीय योजना की तुलना में, आज हमारे चिकित्सकों और अस्पतालोंमें पलंगों की संख्या बढ़ कर पहले की तुलना में क्रमशः लगभग 2 गुनीसे 6 गुनी हो चुकी है। मलेरिया, टी.बी., हैजा Cholera जैसी बीमारियोंसे लोग पहले की अपेक्षा कम पीड़ित होते हैं। वही जानलेवा बीमारियों, जैसे : प्लेग, छोटी माता Small Pox

सबसे बड़ा धर्म है अपने स्वभाव के प्रति सच्चे होना. स्वयं पर विश्वास करो..

, आदिसे होनेवाली मृत्युदर में भी कमी आई हैं. देशमें व्याप्त पोलियो जैसी बीमारी को लगभग हम पूर्णतः खत्म कर चुके हैं. देश में औसत आयु बढ़ी है और बिमारियों से होने वाली मृत्युदर में भी कमी आई है.

नेशनल हेल्थ पालिसी के अनुसार हम सभी के लिए स्वास्थ्य Health For -II के लक्ष्य को भी जल्दी ही प्राप्त कर लेंगे. चिकित्सा विज्ञान में उन्नति करने के साथ ही हम देशमें बीमारियाँ के प्रति जानकारी फैलाने और उससे बचाव के प्रति जागरूकता उत्पन्न करनेमें भी सफल रहे हैं.

तकनीकी क्षेत्रमें :

तकनीकी केमामले में भी हम पहले की अपेक्षाकही अधिक आगे बढ़ चुकेहैं. कई मशीने, यंत्र, आदि का अब हमे आयात नहीं करना पड़ता, बल्कि हम स्वयं ही उसका उत्पादन कर रहे हैं. बड़े - बड़े कारखानों में उत्पादन, मशीनोंकी सहायता से माल बनाना, संगणक से कार्य करना Computerization, आदिने इस प्रक्रिया को अधिक सरल बना दिया है.

Computerization :

आज हमारे देशका प्रत्येक विभाग कम्प्यूटर पर कार्य करता है, किसी भी जानकारी को आप इसके माध्यम से आदान - प्रदान कर सकते हैं. साथ ही सभी सूचनाये भी इसी पर उपलब्ध हो जाती हैं. इसके अंतर्गत ' ई - कॉमर्स ' भी शामिल हैं. जिसके द्वारा हम घर बैठे - बैठे अपना सामान कम्प्यूटरपर खरीद सकते हैं और बेच भी सकते हैं. ये ई - कॉमर्स कम्पनियाँ स्थानीय बाजारोंसे प्रतियोगिता करती हैं, पर वही दूसरी ओर ये कई लोगोंको रोजगार भी उपलब्ध करा रही हैं.

ऑटो - मोबाइल क्षेत्रमें :

इस क्षेत्र में हम अबतक वांछित उन्नति नहीं कर पाए हैं, जैसे : हमारा देश आज भी कारोंके निर्माणकेलिए विदेशी तकनीक पर ही निर्भर है. हमकेवलइसकेकुछभागहीबनातेहैं.

परन्तु प्रयास जारी है और जल्दही हम इस क्षेत्रमें भी सफलता प्राप्त कर लेंगे.

कृषि उत्पादनके क्षेत्र में :

आज हमारे देशमें कृषि करते समय आनेवाली बाढ़, सूखे आदि समस्याओंसे निपटनेके लिए पर्याप्त साधन और तकनीकी उपलब्ध हैं, जिसके चलते आज 21 वीं सदी के भारत देश का उत्पादन कई गुना बढ़ गया है. आज हम हमारे देश की खाद्य - पदार्थों की जरूरतों को तो पूरा कर ही सकते हैं, बल्कि दूसरे देशोंकी जरूरतों के मुताबिक निर्यात करनेमें भी सक्षम हैं. इस स्थिति को पानेमें देशमें चलाई गयी 'हरितक्रांति' का बहुत बड़ा योगदान है. फसलोंके खराब होने, सड़ने जैसी समस्याओं पर हमने नियंत्रण पालिया है और दूसरी ओर उन्नत बीजों, खाद, सिचाईके पर्याप्त और उन्नत तरीके, संग्रहण क्षमता, आदिने इसके विकास में बहुत महत्व - पूर्ण भूमिका निभाई है.

रक्षा उपकरणों के क्षेत्रमें :

हमारे देशमें 3 प्रकार की फौजें हैं : थलसेना, जलसेना और वायुसेना. तीनों को सम्मिलित किया जाये तो हम विश्व की प्रथम 7 शक्तियों में स्थान रखते हैं. साथ ही तीनोंही सेनाओं के रक्षा उपकरण भी हमारे पास पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं. हालही में सबसे कम वजन का लड़ाकू विमान बनाने में भी हमने सफलता प्राप्त की है. इस विमान का नाम ' तेजस ' है और इसके लगभग सभी कल - पुर्जे, मशीने, आदि भारत में बनाई गई हैं. यह हमारी रक्षाके क्षेत्रमें अबतक की सबसे बड़ी उपलब्धि है.

निजी क्षेत्रों को रक्षा क्षेत्रमें सम्मिलित करने से इसके तीव्र गतिसे विकास की सम्भावना ये व्यक्त की जा रही है. इसमें अम्बानी बंधू, टाटा जैसी कंपनियों को शामिल किया गयाहै, परन्तु अभी इनके प्रोजेक्ट सरकार के पास अनुमति हेतु अटके हुए हैं.

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

शिक्षा के क्षेत्रमें :

हमारे देश में शिक्षाका स्तर भी सुधरा हैं. परन्तु अभी तक हम केवल प्राथमिक शिक्षा को ही मुफ्त उपलब्ध करा पाए हैं, जो काफी नहीं हैं. आज हमारे देशमें विद्यार्थी सभी क्षेत्रोंमें उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं. यहाँ पर्याप्त मात्रा में शालाए, महाविद्यालय, आदि खोले गये हैं. साथ ही हमारे यहाँ बाहर के विद्यार्थी भी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं. हमारेदेशमें प्रौढ़शिक्षा अभियान, सर्व शिक्षा अभियान जैसे कार्यक्रम चलाकर देशमें शैक्षिक स्तर को सुधारने के लिए सराहनीय कदम उठाए गये हैं. देशके सम्पूर्ण विकासके लिए लड़कोंकेसाथ - साथ लड़कियों की शिक्षा के लिए भी समुचित प्रयास जारी हैं. बल्कि आज देशमें कल्पना चावला प्रथम भारतीय महिलाअंतरिक्ष यात्री, इंदिरा गाँधी प्रथम महिला प्रधानमंत्री, प्रतिभादेवीसिंह पाटिल प्रथम महिला राष्ट्रपति, चंदाकोच्चर ICICI बैंक की वर्तमान CEO एवं D., आदि जैसी महिलाये तोपुरुषोंसे भी आगे निकल चुकी हैं.

इक्कीसवीं सदी का भारत जहाँ इन क्षेत्रों में उन्नति प्राप्त कर रहा है, वही कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनकी तरक्की अभी बाकी है, जिनकी परिस्थितियोंमें सुधारकी आवश्यकता शेष है, उनमे से कुछ क्षेत्र अग्र-लिखित हैं :-

बेरोजगारी :

आज हमारे देशको युवा-शक्ति के मामले में विश्व का सबसे समृद्ध राष्ट्र माना जाता है, परन्तु रोजगार के अभाव में यह शक्ति व्यर्थ हो रही है और इसी कारण हमारे देश की कई प्रतिभा ये विदेशों में स्वयं को साबित करके रोजगार प्राप्त कर रही हैं, जिसमे देशकाही नुकसान है. देशके युवा दिशा-हीन होकर अपराध के मार्गपर बढ़ रहे हैं. हमारे देशमें हमे रोजगार के अनेक अवसरों की आवश्यकता है. यदि हम बेरोजगारी की समस्या से छुटकारा पाते तो कई समस्याए स्वयंही समाप्त हो जाएगी.

गरीबी :

हमारे देशमें दुर्भाग्य की बात यह है कि अमीर और

अमीर तथा गरीब और गरीब होता जा रहा हैं. इस कारण देश पूर्ण रूपसे विकसित नहीं हो पा रहा और अभी तक विकासशील देशोंकी गिनतीमें गिना जाता हैं. इसका कारण कही न कही स्विस बैंकों में रखा काला धन भी हैं, यदि इसे देश में लाये जाने के प्रयास सफल हो, तो यह समस्या काफी हद तक हल हो सकती हैं.

जनसंख्या :

हमारे देशकी जनसंख्या बहुत ही तेजगति से बढ़ रही हैं, जिसके कारण हम लागू योजनाओं का उचित प्रकारसे लाभ नहीं उठा पाते और सरकार भी इन्हें व्यापक रूपमें सफल नहीं बना पाती. हम भारतीय आज 125 करोड़से भी अधिक हैं. जिसमें सभी सुविधाओं को बांटना, सरकारके लिएभी मुश्किल हैं. इसपर नियंत्रण पाना अत्यंत आवश्यक हैं अन्यथा हमारी समस्याओं की सीमादिन - प्रतिदिन बढ़ती ही जाएगी.

इन सबके बावजूद हमे 'सुपर-पावर' कहा जाताहै, इस का कारणहै : आज दक्षिण एशियामें भारतकी स्थिति सभी क्षेत्रोंमें अन्य देशोंकी तुलना में सबसे मजबूत है, चाहे वह क्षेत्र आर्थिक हो, राजनीतिक क्षेत्र हो, सैन्य बलकी बात हो, सांस्कृतिक क्षेत्रकी बात हो अथवा जन-सांख्यिकी Demographic की. दक्षिण एशिया की जनसंख्या का लगभग 77% हिस्सा हमारे देशका है, इसकी जी.डी.पी. में हमारा योगदान 75% है, 77% भू-भाग हमारे क्षेत्र फलका हिस्सा है, इसके रक्षा बजटका 80% हिस्सा हमारा होता है और इसके सैन्य बलमें 82% हमारा सैन्य बल शामिल है और सबसे महत्व-पूर्ण बात - : हम विश्वकी सबसे बड़ी लोकतांत्रिक अर्थव्यवस्था में से एक हैं., जिसकी वर्तमान जी.डी.पी. दर 9.2% है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में महत्व-पूर्णस्थान रखती है. साथ ही हमारे देशके अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थावाले राष्ट्रोंके साथ समझौते और संधियाँ भी हैं, जो इसे इक्कीसवीं सदीका सुपरपावर बनाने में और विकास कीओर अग्रेसर होने में मदद करती हैं. इस प्रकार इक्कीसवीं सदीके भारत का भविष्य बहुत ही स्वर्णिम है.
